



विकल्प भी अवसर संकल्प की राह में वाद्यक वनते हैं

कांग्रेस की संकीर्णता

कान्टिक को कांग्रेस सरकार का यह आदेश विचार और विरोधभासी ही है कि राजकीय कार्यक्रमों में बड़े मातृम् के केवल तो ही पर गए जाएंगे। यह आदेश इसलिए देना करता है, क्योंकि इसी में यह भी कहा गया है कि राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, राज्यपाल आदि को उपस्थिति वाले कार्यक्रमों में बड़े मातृम् के सभी छह पर गए जाएंगे। आधिकारिक सरकार अपने सभी कार्यक्रमों में बड़े मातृम् के पूर्ण गवर्न से क्यों हितकर रहे है? लगता है ऐसा फैसला केवल इसलिए किया गया ताकि कांग्रेस नेतृत्व और विशेष रूप से गांधी परिवार को संतुष्ट किया जा सके और साथ ही कान्टिक में किसी राजनीतिक तुलना से भी बचा जा सके, लेकिन यह बाद रचना चाहिए कि वे नब्बो को सखी करो हितकारी नहीं होना। यह फैसला इसलिए गांधी परिवार के दबाव का नतीजा दिखता है, क्योंकि इसी 15 अगस्त को कान्टिक में स्वतंत्रता दिवस समारोह में बड़े मातृम् का पूर्ण गवर्न हुआ था। बड़े मातृम् को अलग-अलग अवसरों पर अलग-अलग तरीके से गांधी का फैसला राष्ट्रीय गौर का अनादर ही है। आधिकारिक जब बड़े मातृम् के पूर्ण गवर्न को लेकर एक कानून बना दिया गया है, तब फिर उसकी अहंकारना करने का क्या औचित्य? इससे बड़ी चिंता है और कोई नहीं कि संविधान को सख्य लेने वाली कोई सरकार हो संसद से पारित किसी कानून को अंतर्देशी करे। जो सरकारें हो ऐसा करीगे तो फिर इससे कानून को अहंकारना को प्रवृत्ति को बढ़ा तो मिलेगा।

कान्टिक सरकार का फैसला उन तत्वों को बल प्रदान करने वाला है, जो किसी ने किसी बहाने राष्ट्रीय प्रतीकों को सम्मान देने से इनकार करते हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि स्वतंत्रता संघर्ष का नेतृत्व करने वाली कांग्रेस नेट बैंक को सखी राजनीति के चलते राष्ट्रीय गौर को पूर्ण सम्मान देने से लिए तैयार नहीं। कांग्रेस बड़े मातृम् के दो ही पर गाने पर इसलिए अडिग है, क्योंकि देश विभाजन के लिए जिम्मेदार मुस्लिम लीग को आपसि के बाद 1937 में इस गौर के इतने हो पर गाने का फैसला किया गया था। ध्यान रहे इसके बावजूद मुस्लिम लीग अलगवादी एजेंडे पर चलती रही और देश के विभाजन का कारण बनी। आधिकारिक आज भी मुस्लिम लीग को आपसि को महत्व क्यों दे रही है? कांग्रेस को इसकी अंतर्देशी नहीं करने चाहिए कि जम्मू-कश्मीर में सखरुद इमरान काँग्रेस ने बड़े मातृम् का पूर्ण गवर्न करना पसंद किया। हराने यह रही कि कांग्रेस ने इस पर आपसि जताई। ऐसा कर अपने अगनी संवर्धित मारिफतका का हो परिचय दिया। यह वह रचने को भी तैयार है कि नेशनल काँग्रेस ने उसे यह सोझा देने में रेंर नहीं की थी कि राष्ट्रीय गौर का गवर्न किस तरह हो, इसे तय करने का अधिकार उसे नहीं है।

इलाज की व्यवस्था

संसाधनों का विकसित हो जाना अलग बात है और उसका उपयोग होना दूसरी बात। तब मामला इलाहाबाद बर्ड कोर्ट को लखनऊ खंडपीठ लेने वाला कोई सरकार हो संसद से पारित किसी कानून को अंतर्देशी करे। जो सरकारें हो ऐसा करीगे तो फिर इससे कानून को अहंकारना को प्रवृत्ति को बढ़ा तो मिलेगा।

संसाधनों का विकसित हो जाना अलग बात है और उसका उपयोग होना दूसरी बात। तब मामला इलाहाबाद बर्ड कोर्ट को लखनऊ खंडपीठ लेने वाला कोई सरकार हो संसद से पारित किसी कानून को अंतर्देशी करे। जो सरकारें हो ऐसा करीगे तो फिर इससे कानून को अहंकारना को प्रवृत्ति को बढ़ा तो मिलेगा।

संसाधनों का विकसित हो जाना अलग बात है और उसका उपयोग होना दूसरी बात। तब मामला इलाहाबाद बर्ड कोर्ट को लखनऊ खंडपीठ लेने वाला कोई सरकार हो संसद से पारित किसी कानून को अंतर्देशी करे। जो सरकारें हो ऐसा करीगे तो फिर इससे कानून को अहंकारना को प्रवृत्ति को बढ़ा तो मिलेगा।

सरकार को नए
विकित्सा संस्थाओं
में डाक्टर, उपकरण
और आपत सेवाएं
सुनिश्चित करने पर
भी ध्यान देना होगा

ब्रह्मांड के त्वरित विस्तार पर प्रश्नचिह्न

प्रश्न

क्या हमारा ब्रह्मांड वास्तव में त्वरित गति से फैल रहा है? हमारी वर्तमान वैज्ञानिक समझ अभी अग्रणी है? आधुनिक ब्रह्मांड विज्ञान में यह प्रश्न एक बार फिर चर्चे के केंद्र में है। दो दशकों से अधिक समय से विज्ञानियों का मानना रहा है कि ब्रह्मांड केवल फैल नहीं रहा, बल्कि उसके विस्तार की गति लगातार बढ़ रही है। इस तथ्याचित्रित त्वरित विस्तार को समझाने के लिए 'डार्क एनर्जी' नामक एक रहस्यमय घटक की अवधारणा विकसित हुई। लेकिन अब 'मॉडली' नोटिसस आकाश रास्त्रा नैतिकामिकल सेसरेस्टी में प्रकाशित एक नए अध्ययन ने इस स्थिति पर प्रश्न उपार्ण पर महत्वपूर्ण प्रश्न डाल दिए हैं।

आकाशमोड युनिवर्सिटी के भौतिक विज्ञानी प्रो. सुमीर सरकार तथा डाटा इंस्टीट्यूट आफ फंडामेंटल रिसर्च के अध्यक्ष साह ने 1,700 से अधिक 'टाइप वन' सुपरनोवा वाले गैलिलियो प्लस डाटासेट का वैचारिक विश्लेषण किया। टाइप वन-ए सुपरनोवा को ब्रह्मांडीय दूरी

वापक आकड़ों से विज्ञानी यह जान सकते हैं कि ब्रह्मांड का विस्तार किस गति से हो रहा है

मानने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। नए अध्ययन का महत्वपूर्ण फल यह है कि शोधकर्ताओं ने सुपरनोवा की चमक पर उनके मूल ताकदीय तंत्र की आयु के प्रभाव को भी ध्यान में रखा। उनका कहना है कि अपेक्षाकृत युवा ताकदीय प्रतीक हैं उनका सुपरनोवा व्यवस्था रूप से कुछ अधिक मंद दिखाई दे सकते हैं। यदि अलग दूरी के सुपरनोवा की पूरी तरह सामान्य मानकर उनका दूरी निर्धारण तब तक वैसाविकि से अधिक दूर दिखाई दे सकते हैं। यदि प्रभाव ब्रह्मांड के त्वरित विस्तार का घन पैदा कर सकता है।

शोधकर्ताओं ने एक और महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया: यदि डार्क एनर्जी पूरे ब्रह्मांड में समान रूप से वितरित है, तो त्वरित विस्तार हर दिशा में लगभग समान दिखाई देना चाहिए। लेकिन उनके विश्लेषण में कश्चित् लक्षण का प्रभाव दिखाविक दिखाई



विशेष टाऊन

लुगीर ने पाकिस्तानी तंत्र में सेना प्रमुख के एड को फावली और संपर्कालिक रूप से पैसा अठोट करण एतन कर दिया है कि उस पर किसी भी प्रकार का अंकुश असंभव हो जाए

श्रीराम कालेज आफ कामर्स में पांच सितंबर को अपने संबोधन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ये टुक कहा, 'अगर पाकिस्तान कोई भी नापक करतु करता है, तो भारत के जांबाज उसके घर में घुसकर प्रहार करते हैं।' सलिकल स्टूडेंट्स, बालासोट एयर स्टूडेंट्स से लेकर आगरेसर सिंदूर तक इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। इसमें संदेह नहीं कि पाकिस्तान पर पूरी तरह भारी पड़ू, लेकिन पाकिस्तानी सेना प्रमुख जनरल आसिम मुनीर ने अपने मुक्त को अंशों में घुल झीकने के लिए यह झूठी कहानी गढ़ दी कि उनकी फौजी ने भारत के कदम धाम लिए थे। अगला के बीच अपनी छवि चमकाने में उनका यह परेव इतना कारगर रहा कि इस सैन्य अभियान के दौरान धलसेना की सीधी भूमिका न होने के बावजूद प्रधानमंत्री शहाबाज शाहप ने उन्हें पदोन्नत कर 'फैलड मार्शल' की रैंक से नवाज दिया और बावुसेना प्रमुख के हथुड़ कुछ भी न लगा।

आपरेसर सिंदूर के बाद भी मुनीर ने अपनी छवि को धुनाना जारी रखा। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की जी-हुरी भी उनके हथ में गढ़ा। उन्होंने सैन्य-राजनीतिक नेतृत्व ने न केवल भारत से मध्यस्थता कराने में टेंप के दबे पर मुरर लगाई, ट्रंप की ऐसी खुलासा

जारी रखी कि उनका नाम नोबेल शांति पुरस्कार के लिए आगे भी बढ़ेगा। परंपरागत रूप से पाकिस्तान में सेनाप्रमुख ही सत्ता के सबसे ताकतवर चेहरे रहे हैं, जिनका रखरू निर्यातित सरकार और उसके मुखिया से कहीं अधिक होता है। मुनीर ने प्रधानमंत्री शहाबाज शरीफ एवं अपने बीच सत्ता की गुन आर चीज कर दिया। उन्होंने पाकिस्तान के राष्ट्रीय गौर के हर पहलू में सीधा हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया। इससे भी बढ़कर उन्होंने पाकिस्तानी तंत्र में सेना प्रमुख के पद को कानूनी और संवैधानिक रूप से ऐसा अपेक्ष करण करना का फैसला किया कि उस पर किसी भी प्रकार का अंकुश असंभव हो जा। पृथिवीविक रूप से पाकिस्तानी सेना हो स्वयं की देश की वास्तविक शासक माननी रही है। वह नौसेना और बावुसेना के कुछ 'तकनीकी सेसोर्टों' से अधिक कड़ नहीं समझती, भले ही सैदीतिक तौर पर इन दोनों अंगों के प्रमुखों को बलसेना प्रमुख के समकक्ष दर्जा प्राप्त रहा हो। अब यह मानक समानता भी अतीत की बात हो चुकी है। नौसेना और बावुसेना के अधिकारों के ताबूत में आखिरी जीव 20 अगस्त को उस बल टोकी गई, जब पाकिस्तानी संसद ने 'हिफेस फौसेज आफ



अंधेरा गमगु

पाकिस्तान एक्ट, 2026' पर मुरर लगा दी। इसके साथ ही 'नेशनल कमांड अथॉरिटी, 2010' में भी संशोधन कर दिया गया। इन विधायी प्रक्रियाओं को पटकथा गत वर्ष नवंबर में पाकिस्तानी संविधान के 27वें संशोधन के जरिये लिखना शुरू हुई। इसके साथ ही अब समूचे सैन्य प्रविधान पर मुनीर का कमांड अथॉरिटी एक्ट में संशोधन के नौसेना एवं बावुसेना प्रमुख उनके संसदभवन न रहकर एक तरह से उनके माहल बकर रह गए हैं।

27वें संविधान संशोधन के जरिये चीफ आफ डिफेंस फौसेज यानि सैडीएफ का नया पद सृजित किया गया। इस कानून का एक पेच यह भी है कि यह पद धलसेना प्रमुख के पास हो खेगा। यह कानून सुनिश्चित करता है कि सैन्य सार्वभौमिक पहलुओं पर सैडीएफ का ही पूर्ण नियंत्रण होगा। यानी पाकिस्तानी नौसेना और बावुसेना का राजनीतिक, प्रशासनिक एवं प्रशासनिक नेतृत्व सैडीएफ के पास हो होगा। स्पष्ट है कि सैन्य अधिकारियों की पदोन्नति, नियुक्ति और तबादलों में चुनी हुई सरकार की

अब कोई भूमिका नहीं रह जाएगी। इस तरह सेना प्रमुख के प्रस्तावों को मंजूर देने की जो रसम अदयागी वाली परंपरा बनी हुई थी, उस पर भी पूरी तरह नई गिर जायगा। यह कयावद कुछ और नहीं, बल्कि कानूनी प्रक्रिया के जरिये पाकिस्तान में फौजी की पकड़ की और पुष्ठा एवं गहरा करने जैसा है। नेशनल कमांड अथॉरिटी एक्ट में संशोधन के बाद अब सैडीएफ ही उस संस्था के उपप्रमुख होंगे, जो युद्ध के समय पाकिस्तान के परमाणु हथियारों के उपयोग सहित उनके पूरे संयोजन का फैसला करती है। पाकिस्तान के परमाणु शस्त्रागार को सुरक्षित रखने के जिम्मेदार सैन्य जनरल की वास्तविक नियुक्ति भी अब सैडीएफ ही करेगी।

यह कोई खो-छिपी बात नहीं रही कि पाकिस्तान में लोकतांत्रिक नकाब के पीछे असली चेहरा फौजी का ही रहा है। विदेश नीति की बागडोर भी हमेशा सेना के हाथ में रही है। किसी अब सैडीएफ को कानूनी तौर पर असंमित अधिकार मिल जायगी तो इस नकार भी की जरूरत नहीं रह जाएगी। भारत के लिए यह चिंता का

अब भी नासूर बना हुआ है आतंकवाद

आतंकवाद समकालीन विश्व की सबसे जटिल समस्याओं में से एक है। इसने समूचे विश्व को अपने प्रभाव से प्रभावित किया हुआ है। आज के दौर में यह समस्या और विकट होती जा रही है और किसी न किसी रूप में विश्व को अस्तित्व कर रही है। आतंकवाद को परिभाषित किया जाए तो यह किसी विशिष्ट विशेष या संगठन द्वारा अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सारस बल का प्रयोग कर समाज में हिंसा और भय उत्पन्न करना होता है। हिंसा और भय से समाज में भारी उथल-पुथल और आशांति पैदा कर समाज में एक व्यापक गतिविध पैदा करने की मंशा से की जाने वाली घटनाएं आतंकवाद की श्रेणी में आती हैं। ऐसी घटनाओं को अंजाम देने वाले कहीं ज़िहाद के नाम पर, कहीं पृथक देश बनाने की मांग पर और कहीं शोषण के विरुद्ध संघर्ष चलाने के नाम पर हिंसक घटनाओं को अंजाम देते हैं।



आशीष विजय

यह विडंबना ही है कि आतंकी खतरों से जुड़ा रहा अमेरिका उसके सबसे बड़े संरक्षक पाकिस्तान का शुभचिंतक है



आतंक के विरुद्ध वैश्विक एकजुटता आवश्यक है

वैश्विक के इतिहास में सबसे बड़ी आतंकी घटना अलकायदा द्वारा सितंबर 2001 में अमेरिका के विश्व व्यापक केंद्र और 'पेंटागन' पर हुई थी। 25 वर्ष पुरानी इस आतंकी घटना में लगभग तीन हजार लोग मारे गए थे और मानव खयल हुए थे। इस घटना ने समूचे दुनिया की नींद उड़ा दी। इस घटना के बाद अमेरिका और उसके साथी देशों ने आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक अभियान छेड़ा, लेकिन वह बरक गया। आज स्थिति यह है कि आतंकवाद से पांडित्व रहा अमेरिका उसके सबसे बड़े संरक्षक पाकिस्तान का दोसर और शुभचिंतक बना हुआ है। यह आतंक के खिलाफ अमेरिका के दोहरे मानदंड का परिचायक है। कुछ ऐसा हो रखा चीन और मानव अंतर देशों का भी है। इस कारण भी भारत पाकिस्तान द्वारा पोषित आतंकवाद से ग्रसित है। भारत में अस्थिरता और देश में अशांति फैलाने के उद्देश्य से अरबक भीषण आतंकी हमले किए गए। हमले अपने पूरे प्रमाणनही राजवा गंधी जो भी पड़े हो घटना को कुछ दिया। यह घटना भारत के इतिहास में सबसे दर्दनाक घटनाओं में से एक थी। भारत में आतंकवाद हमले लगातार होते रहे हैं। 2001 में

भारतीय संसद पर हमला, 2002 में अक्षरकाम मंदिर पर हमला, 2006 में मुंबई लॉकर बम पर हमला और 2008 में मुंबई पर हमला, 2019 में पुलवामा और 2025 में पहलगाण हमला प्रमुख आतंकी घटनाएं हैं। हमने सैकड़ों की जान गँवानी है। भारत में होने वाली आतंकी घटनाओं के पीछे पड़ोसी देश पाकिस्तान की भूमिका रही है। फिर 'धुंधले' पाकिस्तान समर्थित आतंकवाद और कानूनी को बड़े ही बेतुकर ढंग से प्रस्तुत कर दिया। विडंबना यह कि मुंबई आतंकी हमले में पणाली साथ्य मिलने के बाद भी राजनीतिक साहस की कमी और अवदुरीतता के कारण विज्ञातों को न्याय मिलने में बहुत देर हुई। उस समय किसी दबाव में तत्कालीन सरकार पाकिस्तान पर कोई दोस कांवाब नहीं कर पाई। कश्मिर के एक बंफ्ट नेता ने जो एक पुराना कश्मिचन के अवसर पर झूठ विमर्श कर कर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की छवि खराब करने का काम किया। ये प्रयोग कहीं न कहीं

हमारी राजनीतिक कमजोरियों की भी उजागर करते हैं, जिससे ऐसी घटनाओं के पीछे की ताकतों के मसूकों को और बल मिलता है। आतंक के खिलाफ जैसी एकजुटता का अभाव विश्व स्तर पर भी, कैसा ही राष्ट्रीय स्तर पर भी। आतंक के खिलाफ इतने बड़े के संघर्ष के बाद भी आतंकवाद पूरी दुनिया के लिए एक नासूर बना हुआ है। पहलगाण हमले के जनक में भारत की सेना ने अदभ्य साहस और पुष्ठाव का परिचय देते हुए पाकिस्तान में घुसकर बलापूर्व और मुरीकडे जैसी जगहों पर मौजूद बड़े आतंकी कैम्प को ध्वस्त किया और सैकड़ों आतंकीयों को मौत के घाट उतार दिया। भारत सरकार के इस मजबूत और और सेना की बहादुरी को पूरी दुनिया ने देखा। यह अपने आप में एक बरलते हुए नए भारत की तस्वीर है, लेकिन समस्या यह है कि आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक एकजुटता कायम नहीं हो पा रही है। प्रमाणनही मोट अनेक वैश्विक मंचों से आतंकवाद के खिलाफ समूह बना प्रकट करते रहते हैं। वे आतंकवाद के खिलाफ 'जोरी टारलस' को नीति की बरलता करते हैं।

हाल ही में किर्गिस्तान की राजधानी बिश्केक में आयोजित 'शेअर्ड सहयोग संरक्षण' के सम्मेलन में सदस्य देशों ने आतंकवाद पर दोहरे रवये के खिलाफ आवाज उठाई। 'बिश्केक डिक्लेरेशन' के नाम से रिए गए साझा बयान में कहा गया कि सदस्य राष्ट्र आतंकवाद, अलगवावाद और उग्रवाद के खिलाफ लड़ाई और इसके खतरे को निपटने अपने प्रतिबद्धता व्यक्त करते हैं। इस घोषणा में अपने निहित स्वार्थों के लिए आतंकवाद और उग्रवाद की अवैक्यता पर भी चिंता व्यक्त की गई। लेकिन है कि ऐसी ही चिंता किम्बत समेलन की भी व्यक्त की जा रही है या नहीं? कैसे, केवल चिंता जाना हो पर्याप्त नहीं। आतंक के खिलाफ करे बातों हो उसे ताकत प्रदान कर रही हैं। आज सबसे आवश्यक यह है कि आतंकवाद को संयुक्त राष्ट्र की ओर से परिभाषित किया जाए और इसके के पोषक देशों को दंडित किया जाए। (लेखक दिल्ली विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर हैं। response@jagran.com)

सबक होगा, क्योंकि पहले से ही कमजोर निष्ठावित सरकार के साथ बातों का कोई अर्थ-अर्थियता ही नहीं बचेगा। पाकिस्तानी सेना प्रमुख की ताकत जिस कर बढ़ गई है, उसे देखते हुए कोई प्रधानमंत्री उन्हें यह समझाने में संकोच ही करेगा कि भारत से बँर असल में पाकिस्तान का ही अधिक अहित कर रहा है। रही-सही कसर मुनीर का वह कदर सौच पूरा कर देगा, जो आज भी पाकिस्तान की बुनियाद बने द्विष्ट सिद्धांत को अपना मूल मानता है।

भारत के प्रति मुनीर की कटुता बहुत भारी है, जिसके निरिष्ट भविष्य में कम होने के कोई आसार नहीं। वैचारिक पहलुओं से इतर भी इसका एक बड़ कारण यह भी है कि ईरान और अमेरिका के बीच कश्चित् मध्यस्थता में निर्राई भूमिका के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उन्हें चूक मिली है, क्योंकि वही पाकिस्तानी प्रयासों का चेहरा बन रहा है। हालांकि 'फुस्तामाबाद समझौता' बेतानी ही रहा, लेकिन इसके जरिये उग्र-मुनीर के मिश्र अभिमान से भारत के विरुद्ध उनकी बेवकूी एवं अविश्व नीति पालन की तुलना में और जहरीली हो जाएगी। अब मुनीर के हाथ में सत्ता की असंमित ताकत आने के बाद पाकिस्तान में पहले से कमजोर लोकतंत्र की हालत और खस्ता हो होगी। अदवातों भी फौज के दुरांग पर चरने को मजबूर होगी। इसे में इमरान खान जैसे राजनीतिक किशोरीयों को रिहाई अरुभव दिखती है। केवल अफगनिस्तान के साथ बड़ती समस्याएँ पर टाँटनी एवं बलुच विद्रोहों से निपटने में मुनीर की नकामी हो उनकी राह में बड़क कठिने राहें हैं। (लेखक पूर्व राजनयिक हैं। response@jagran.com)



प्रेम और अधिका

प्रेम के साथ अधिकार के भाव की अंतर्निहित मान लिया जाता है। सम्भ्रामा में भी देखा जाए तो प्रेम और अधिकार का संबंध अतुल्य है। सामान्यतः हम अधिकार को मंगने, जताने या प्राप्त करने की वस्तु समझते हैं, किंतु सत्य भी प्रेम में अधिकार माना नहीं पड़ता। प्रेम के साथ ही स्वतः जान लेंगे। जहाँ प्रेम है, वहाँ अपनत्व है और जहाँ अपनत्व है, वहाँ अधिकार किसी बाहरी घोषणा का विषय नहीं रह जाता। सत्य प्रेम प्रिय पर अधिकार जमाने का नाम नहीं, बल्कि स्वयं की प्रिय में विस्मयित कर देने की अवस्था है। वहाँ भी 'तुम' के बीच की दूरी धीरे-धीरे स्वतः मिटने लगती है। प्रिय और प्रेम में कोई फिन्ना नहीं रह पाता। वस्तुतः यह अप्रेम और आम विमृति की अवस्था है। प्रेम करते वाला प्रिय को केवल चाहता नहीं, अपितु उसके सुख-दुख को केवल चाहता नहीं, अपितु प्रेम करते लगता है। इसलिए अप्रेम अधिकार माना भी एक प्रकार की दूरी का संकेत है।

प्रति में इस प्रेम का सौवीर कण दिखाई देता है। भगत जग भगवान को अपना मानता है और अंततः स्वयं को भगवान में समाहित कर देता है, तब भगत और भगवान के बीच का भेद भी क्षीण होने लगता है। भोग का कृष्ण के प्रति प्रेम की शक्ति आम-विमृति का उदाहरण है। वहाँ भगवान प्रेम प्रिय नहीं, प्रियमय है और भगत केवल याचक नहीं, प्रेम में पूर्णतः समाहित है। वास्तव में सत्य प्रेम की राह में सबसे बड़ी बाधा द्वैत है। जब तक दो बोझ है, तब तक पतने, खोले और अधिकार जताने की भावना बन रही है। अंततः की अनुभूति में प्रेम अप्रेम और प्रेम पर पड़ता है, क्योंकि प्रेम प्रेम करने वाला और प्रिय प्रेम पड़ता है, क्योंकि प्रेम प्रेम करने वाला मांग नहीं जाना, प्रेम स्वयं ही अधिकार माना जाता है। प्रेम के ऐसे ही प्रवाह से जीवन समृद्ध होता है।

ड. प्रताप अग्निहोत्री

भविष्य की चुनौतियों का रहे ध्यान

'आई पीटी' को रखम बनाने की चुनौती' संघर्ष के प्रकाशित आलेख में जीवन वाक्यरेखी ने युवाओं की उम्र की चुनौती को देश के सबसे बड़ी ताकत हो गई। युवा कर्मिण जनों, उत्साह, प्रतियोगिता और बदलाव लाने का सपना होता है। यही कारण है कि किसी भी राष्ट्र के भविष्य का निर्माण उनसे जुड़ा पीढ़ी की जिज्ञा और देश पर निर्भर करता है। आज बढ़ती बेरोजगारी, प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में अभिप्रेरणा और प्रत्यक्ष लोक जैसी दुनिया युवाओं के सामने गंभीर चुनौती बनकर खड़ी है। ऐसे परिस्थितियों में उनके भविष्य के साथ-साथ व्यवस्था के प्रति उनके विश्वास को भी प्रभावित करती हैं। युवाओं में बढ़ती बेरोजगारी को केवल विश्वास प्रदर्शन के रूप में देखने के बजाय उसके पीछे छिपी कारणों को समझने की आवश्यकता है। एक युवा वर्षों तक मेहनत कर प्रतिस्पर्धी परीक्षा की तैयारी करता है। यदि परीक्षा में सफल प्रमाणन नहीं तो नए या पुराना प्रक्रिया में मजबूती सामने आए, तो उसे गहरा आघात पहुँचता है। इसलिए परीक्षा प्रणाली को पारदर्शी, सुनिश्चित और पारदर्शक बना प्रक्रियागत होने चाहिए। युवाओं की कौशल, उद्यमिता, तकनीक और नए रोजगार क्षेत्रों में जीर्णता भी जरूरी है। बाजार की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप प्रशिक्षण देकर युवाओं को रोजगार योग्य बनाया जाना चाहिए। स्वरोजगार के लिए आसान ऋण व्यवस्था उपलब्ध कराने की भी जरूरत है। युवाओं को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करना भी आवश्यक है। himanshushekhara.mca@gmail.com

मेलवाक

सख वगु सर्वक्षण-2026

केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा सख वगु सर्वक्षण-2026 में 130 शरीर की रैंकिंग जारी की गई है। इसमें लखनऊ ने पहला और ईंदर ने दूसरा स्थान हासिल किया। इससे प्लानिज्मक तथ्य यह है कि देश के किसी भी बड़े महानगर ने वर्ष 2025-26 में पीएम 10 के स्वीकृत राष्ट्रीय मानक को हासिल नहीं किया। प्रश्न का उत्तर हमें यह है कि सख वगु सर्वक्षण के पीछे क्यों की तुलना में 14.7 अंकों का सुधार करते हुए 21वें स्थान हासिल किया है। हालांकि, इस रैंकिंग के साथ प्रश्न को निपटने के संस्कारों दर्बों और जमाने महानगर के बीच गंभीर खाल भी खड़े होते हैं। महानगरों में गुणवत्तापूर्ण हवा उपलब्ध कराना आज एक बड़ी चुनौती बन चुका है। सख हवा में सौस लेना पर्यावरण का अधिकार है और यह जीवन जीने के अधिकार से भी जुड़ा हुआ है। प्रश्न के मुद्दे पर दिल्ली उच्च न्यायालय से लेकर उच्चम न्यायालय तक दिल्ली सरकारों के कई बार पटकार लग चुकी हैं। शहरी की निर्भरता, निर्माण स्थलों की हवा पर निर्भर, करे का वैज्ञानिक निरासरा, रीत हाथ बढ़ाना, इवैडिक बहानों की बड़बा देन और प्रत्यक्ष प्रदूषण जैसे उपयों पर लगातार चर्च होती है, लेकिन इनका प्रभाव जमीन पर अपेक्षित स्तर पर नजर नहीं आता। पहले बड़े वर्षों में देख गया है कि दिल्ली-एनडीएस संयुक्त देश के कई महानगरों में त्वीयरी और सीसई के दौरान

प्रश्न का स्तर बेहद खराब हो जाता है। ऐसे स्थिति में बुनुरी, बर्ची और सीस रैंकिंग समस्याओं से जुड़ा रहे लोगों को सबसे अधिक परेशान होती है। बर्ची के भविष्य को लेकर चिंता और भी गंभीर है। संस्कारों की घोषणाओं और रैंकिंग से आगे बढ़कर प्रश्न के वास्तविक स्त्री की पर्यावरण का स्थायी समझाना लागू करने चाहिए। सख हवा की नाररिकों की भी कड़ु न जलाने, सार्वजनिक पर्यावरण में सख-पीछी को रख कराने और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार व्यवहार करने की जरूरत है। सख हवा की स्थिति एक संस्कार का राजनीतिक कवा मुह नहीं, बल्कि हर नागरिक के जीवन और भविष्य से जुड़ा प्रश्न है। यदि समय रहते ठोस कदम नहीं उठाए गए तो अपने वाली पीढ़ियों को इसकी भी चमकी चमका पड़ सकती है। दिल्ली स्थित सख महानगरों को विकास के साथ सख और स्वस्थ वातावरण सुनिश्चित करने की दिशा में गंभीरता से काम करने होंगे।

महेश कुमार, सिद्धम, राजस्थान

इस रसम में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा किसी जागरण के राष्ट्रीय संस्कार पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पत्राचार आधार आम्बित है। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पत्र पर भेजें:
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्कार,
बै-210-211, सेक्टर-63, नोडा
ई-मेल: response@jagran.com



सबक के बजाय

कुछ समय पहले दिल्ली के जंतर मंतर पर कारकीर्ष जनता पार्टी की अगुआई में विद्यार्थियों के विरोध प्रदर्शन के खिलाफ पुलिस ने जिस तरह की बेलगाम कार्रवाई की थी, उस पर हर तरफ से तीखे सवाल उठे थे। यह भी कहा गया कि अगर विद्यार्थियों का अपने मुद्दों पर बात करना, सरकार से खामियों को दुरुस्त करने की मांग करना इतना मुश्किल है और इसके बदले उन्हें पुलिस की बेरहम कार्रवाई का सामना करना पड़ता है, तो यह देश के लोकतांत्रिक ढांचे के किताब अनुकूल है। यहां तक कि सुप्रीम कोर्ट ने भी इस मामले पर तीखी नाराजगी जाहिर करते हुए कहा था कि अदरनकारियों के खिलाफ पुलिस की कार्रवाई और माफी दे देना बेहद दुखद है। अदालत ने यह भी कहा कि पुलिस अफसरों से अपेक्षित तटस्थता भी गायब होती दिख रही है। कायदे से पुलिस-प्रशासन और सरकार को अदालत की इस टिप्पणी पर गौर करते हुए अपने रवैये में सुधार करने की जरूरत है। अगर शीर्ष अदालत की टिप्पणियों की पुलिस को कितनी फ्रिक् है, यह सिर्फ इतने से ही समझा सकता है कि जंतर मंतर पर प्रदर्शन में शामिल होने को कारण बताई कर विद्यार्थियों को नोटिस देना शुरू कर दिया गया है। जबकि इसी मामले पर सुप्रीम कोर्ट पुलिस के रवैये पर नाराजगी जता चुका है।

गौरलव है कि जंतर मंतर पर हुए प्रदर्शन में शामिल होने के आरोप में नौएटा की कार्यकारी मजिस्ट्रेट ने गैरतयबद विधिविधायक के एक छात्र के खिलाफ नोटिस जारी कर दिया था। इस मामले पर सुनवाई के दौरान बुलावा को सुप्रीम कोर्ट ने कार्यकारी मजिस्ट्रेट को कड़ी फटकार लगाई। प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत ने साफ शब्दों में कहा कि शीर्ष अदालत के पहले के आदेश के बावजूद मजिस्ट्रेट ने ऐसा नोटिस जारी करने की हिम्मत कैसे की। दरअसल, अदालत ने अपने पहले के आदेश में साफ तौर पर कहा था कि किसी भी विद्यार्थी के खिलाफ कार्रवाई नही की जाएगी। जाहिर है, दिल्ली में प्रदर्शन और उममें हुई कार्रवाई के संदर्भ में अदालत ने एक तरह से स्पष्ट लहजा में पुलिस और प्रशासन को एक बार फिर उसकी सीमा याद दिलाई है। हालांकि छात्र को जारी नोटिस बाद में वापस ले लिया गया, लेकिन यह विचित्र है कि नौएटा की कार्यकारी मजिस्ट्रेट को यह कार्रवाई करते हुए अदालत के निर्देश का खत्यात खतने की जरूरत महसूस नहीं हुई थी।

सवाल यह है कि सुप्रीम कोर्ट के स्पष्ट आदेश के बावजूद अगर किसी छात्र को प्रदर्शन में शामिल होने के लिए नोटिस जारी किया जाता है, इस दुस्साहस को सात अक्षिर क्या है? क्या ऐसा पोरोड रूप से सरकार के संरक्षण और निर्देश की वजह से किया जाता है? अगर ऐसा नहीं है, तो पुलिस या प्रशासन की नजर में शीर्ष अदालत के निर्देशों की क्या अहमियत है? यह समझना मुश्किल है कि जब पुलिस को किसी अंशालन से निपटने के लिए नैतान किया जाता है, तो संवाद के जरिए समाधान की यह खोजने के बजाय कई बार वह बिना किसी हिचक के प्रदर्शनकारियों के खिलाफ अधिकतम बेरहम क्यों हो जाती है। यह ध्यान रखने की जरूरत है कि अगर शांतिपूर्ण तरीके से फिर जाने वाले विरोध प्रदर्शनों को दबाने के लिए बलाप्रयोग या कार्रवाई की धमकी का सहारा लिया जाएगा, तो इसका देश के लोकतांत्रिक ढांचे पर दूरगामी असर पड़ेगा। सरकार की और से हुई लापरवाही या उसकी किसी कमी पर सवाल उठाना या अपनी मांगों के साथ सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करना आना नागरिकों का संवैधानिक अधिकार है। अधिव्यक्ति का यह अधिकार अगर सुरक्षित है, तो इसी से लोकतंत्र का जीवन बचेगा।

आपदा के रास्ते

बिहार वर्ष बाढ़ की विभीषिका का सामना करता है। इसका मलबल यह होता है कि इसकी प्रकृति को समझ कर इससे बचाव के इंतजाम किए जा सकते हैं। अगर इतने वर्षों से अमूमन हर वर्ष बाढ़ की तबाही के बावजूद क्यों इस प्राकृतिक आपदा से बचाने के लिए एक कभी ठोस उपाय नहीं किए गए। इस बार भी नदियां उफान पर हैं। कई नदियां खतर के निशान से उभर रह रही हैं। पिछले कुछ दिनों से लगातार बारिश और नेपाल के जलदाहण क्षेत्र में भारी वर्षा की वजह से राज्य के चौदह जिलों में स्थिति गंभीर हो गई है। चालीस लाख से ज्यादा लोग बाढ़ से प्रभावित हुए हैं। बड़ी संख्या में लोग बेघर हो गए हैं। राहत शिविरों को अपनी सीमा है। गौरलव है कि हर साल नेपाल से आने वाली नदियां तबाही लेकर आती हैं। बावजूद इसके राज्य सरकार इन नदियों के पानी को प्रभावित और आना लोगों को राहत के लिए कोई ठोस तंत्र विकसित नहीं कर पाई है।

हर वर्ष बाढ़ रहत कार्यों पर निमित्तों के बजाय अगर सरकार बाढ़ निरोधन के उपायों पर ध्यान केंद्रित करती, तो इस समस्या को सुलझाने की दिशा में काफी आगे बढ़ा जा सकता था। नागरिकों की सुरक्षा के लिए बनाए गए नटबन्ध आज नाकाम साबित हो रहे हैं, तो इस समस्या की जड़ में जाने की जरूरत है। यह निराशाजनक ही है कि हर साल बाढ़ राहत के नाम पर रस्मों कवायद कर अमले वधे फिर बाढ़ की प्रतीक्षा की जाती है। एक बड़ी चुनौती है कि कि हिमालयी नदियां हर बार अपने साथ भारी मात्रा में गाद लेकर आती हैं, जो राज्य की नदियों में जमा होती जाती हैं। नतीजा यह कि उधरों हो रही नदियों का पानी रिहाशरी इलाकों को अपनी चपेट में ले लेता है। सुरासन का दाय्य करने वाली सरकार ने इस समस्या को गंभीरता से लिया होता, तो राज्य में जल अंधधुन की नई तस्वीर बन सकती थी। यह बेवजह नहीं है कि देश के अलग राज्यों की तुलना में बिहार को इस आपदा से सबसे अधिक नुकसान होता है। सही है कि बाढ़ को रोकना नहीं जा सकता, लेकिन सवाल पर योजनाओं को साकार कर जन-जीवन को व्यापक नुकसान से जबर बचाया जा सकता है।

नशे के जाल में उलझती युवा पीढ़ी



प्रमोद कुमार बाजपेई

उस व्यक्ति की त्रसरी का बस अंदाजा ही लगाया जा सकता है, जिसका बेठा नशे का आदी हो चुका है। इसी वजह से उसकी पढ़ाई छूट चुकी है और अब वह दिन भर कंप्यूटर गेम खेलता रहता है या दिन भर टुक के अंडे पर जुआ खेलता रहता है। पिता इसलिए परेशान हैं कि वह अब उसके मादक पदार्थों पर भी हाथ साफ करने लगा है और उसे अपने बेटे के भविष्य का अनुमान है और अब वह इसकी को लेकर फिक्रमंद है। हालांकि खुद पचास का पिता भी नशे के जाल में इस कदर फंसा हुआ है, उसके हाथ कांपने लगे हैं और वह टीक से खड़ा भी नहीं हो पाता है। बीते कुछ महीने के भीतर ऐसे मामले अब तेजी से बढ़ने लगे हैं। जिसका नतीजा तो लक की वजह से सब कुछ बर्बाद हो चुका है, वैसे लो अब परामर्श और आपात हस्तक्षेप तक के लिए मनोचिकित्सकों या काउंसलरों के पास पहुंचने लगे हैं।

संकट की भयावहता के चलते केंद्र सरकार अब नशा मुक्त भारत अभियान की बात कर रही है और राज्यों के मुख्यमंत्री भी नशाखोरी के विरुद्ध बड़ी-बड़ी रैलियां कर रहे हैं। युवाओं को राशय दिलवाया जा रहा है, स्कूल-कॉलेजों को नशे के विरुद्ध मोर्चा बटाने के लिए एगोवर्षा किया जा रहा है। वहीं नशे के खिलाफ लड़ाई के लिए पुलिस प्रशासन को चुन-चुनकर किया जा रहा है तथा बड़े पैमाने पर मादक पदार्थों के तस्करों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। अगर इसी बीना यह खबर भी आती है कि पंचम में एक ग्रामीण ने जब मादक पदार्थों की थड़ल्ले से आगुर्ति पर सवाल उठाया, तो उसे प्रताड़ित किया गया और आखिर उसने आत्महत्या कर ली।

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा एक्स के 'मैनाल ड्रग डिपेंडेंस ट्रीटमेंट सेंटर' के सहयोग से जारी की गई आधिकारिक रिपोर्ट 'मैनाल ड्रग डिपेंडेंस आफ ससस्टेंड यूथ इन इंडिया' के अंकड़े यह स्पष्ट करते हैं कि मादक पदार्थों की खरीद-बिक्री और नशे की समस्या अब केवल कुछ महानगरों या सीमावर्ती क्षेत्रों तक सीमित नहीं रही। यह एक सर्वव्यापी राष्ट्रीय स्वास्थ्य आपातकाल और सामाजिक संकट का रूप ले चुकी है। रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 10 से 75 वर्ष की आयु वर्ग के बीच लगभग 16 करोड़ लोग राशय का सेवन करते हैं, जिनमें से 5.7 करोड़ से अधिक लोगों को तत्काल चिकित्सीय उपचार की आवश्यकता है। वहीं, लगभग 3.1 करोड़ लोग भांग, गांजा या चरस जैसे कैनिबस उत्पादों का सेवनाल कर रहे हैं। सबसे चिंताजनक स्थिति ओपियोइड्स (अफीम, हेरोइन और सिंथेटिक ड्रग्स) के मामले में है। भारत में ओपियोइड का उपयोग वैश्विक औसत से लगभग तीन गुना अधिक है। देश में करीब 2.26 करोड़ ओपियोइड उपयोगकर्ता हैं, जिनमें से सात लाख से अधिक लोग इस लत के गंभीर दुस्तरफ में फंस चुके हैं।

इससे भी अधिक चिंताजनक करने वाला तथ्य यह है कि देश के लगभग 1.7 फीसद बच्चे और किशोरों (बेनी बच्चे) अलगाव लहख खाते हैं 'इन्हेडेटेड' बच्चे सुनने वाले नशे (नशी धुनर, फट्टर, ड्रग्स आदि) के जाल में फंस चुके हैं। हाल के वर्षों में एमएडीएम, मेथामफेटामाइन और अवैध दवाओं (सिंथेटिक ओपियोइड्स) को मांग और जवती में आधा भारी उछाल



यह साबित करता है कि नशे का बाजार अब पारंपरिक से बदलकर अवैधक भातक राशयानिक स्वरूप अहिलवार कर चुका है।

मादक पदार्थों की यह विविधता पूरे देश में फैली है, लेकिन बीजालिक और सामरिक कारणों से कुछ राज्य इसके गढ़ बन गए हैं। बिजोल, नगालैंड,

नशे की लत से पीड़ित व्यक्ति को केवल एक 'अपराधी' या 'चरित्रहीन' के बखसे से देखना हमारी भूल होगी। शिश्किया विज्ञान के अनुसार मादक पदार्थों या ड्रग की लत एक मानसिक बीमारी है। शुरुआत में युवा वॉ जलाकट परिस्थिति, करिअर की अंतिमिश्रिता, बेरोजगारी जलित अवसाद या सहकर्मियों के दबाव के कारण अजानबे में इस दलदल में फंका रहता है, लेकिन धीरे-धीरे राशयानिक निर्भरता के कारण व्यक्ति का अपने मुश्किल पर नियंत्रण नहीं रहता। जब कोई व्यक्ति इस लत से बाहर निकलना चाहता है, तो सबसे बड़ी बाधा 'विज्ञान सिस्टम्स' यानी बहुरा और शारीरिक कष्ट तन से कतरता है। परिणामतः यह समस्या बंध कतरों के भीतर ही सुलझती रहती है और आखिरकार आहतवस्था या गंभीर अपराधों के रूप में सामने आती है। मर्गी लत को पूरा करने के लिए युवा वर्ग चोरी, झपटमारी और यहां तक कि जन्म अपराधों की राह पकड़ लेता है।

असमाकत प्रवेश, शिश्किया और माफीपू जैसे उन्नत-पूरी राज्य ओपियोइड और नशीली दवाओं से सबसे ज्यादा प्रभावित हैं। दूसरी ओर, पंजाब, हरियाणा और

दिल्ली राष्ट्रीय राशयानी क्षेत्र सिंथेटिक मादक पदार्थों और हेरोइन का एक बड़ा केंद्र बन चुका है। दरअसल, भारत दुनिया के दो सबसे बड़े अवैध अफीम उत्पादक क्षेत्रों के बीच फंसा हुआ है। इसके पश्चिम में 'गोल्डन क्रिसेंट' (पाकिस्तान, अफगानिस्तान और ईरान) है और पूर्व में 'गोल्डन ट्रायंगल' (म्यांमार, लाओस और थाईलैंड) है। इससे भारत न केवल मादक पदार्थों की तस्करों के लिए एक प्रमुख 'ट्रांजिट स्ट' बना, बल्कि धीरे-धीरे एक विशाल उपभोक्ता बाजार में भी तब्दील हो गया। वर्तमान में ड्राकैबे, फिटोकेरोसी और ड्रोन तकनीक के माध्यम से होने वाली उच्च-तकनीक तस्करों के संभाल ने इस चुनौती को कई गुना बढ़ा दिया है।

नशे की लत से पीड़ित व्यक्ति को केवल एक 'अपराधी' या 'चरित्रहीन' के चरमे से देखना हमारी भूल होगी। शिश्किया विज्ञान के अनुसार मादक पदार्थों या ड्रग की लत एक मानसिक बीमारी है। शुरुआत में युवा वर्ग गलाकट प्रस्थिति, करिअर की अंतिमिश्रिता, बेरोजगारी जलित अवसाद या सहकर्मियों के दबाव के कारण अजानबे में इस दलदल में फंका रहता है, लेकिन धीरे-धीरे राशयानिक निर्भरता के कारण व्यक्ति का अपने मूलिक पर नियंत्रण नहीं रहता। जब कोई व्यक्ति इस लत से बाहर निकलना चाहता है, तो सबसे बड़ी बाधा 'विज्ञान सिस्टम्स' यानी बहुरा और शारीरिक कष्ट तन से कतरता है। परिणामतः यह समस्या बंध कतरों के भीतर ही सुलझती रहती है और आखिरकार आहतवस्था या गंभीर अपराधों के रूप में सामने आती है। मर्गी लत को पूरा करने के लिए युवा वर्ग चोरी, झपटमारी और यहां तक कि जन्म अपराधों की राह पकड़ लेता है।

इस महामारी से निपटने के लिए वर्तमान में आगुर्ति, मांग और नुकसान में कमी की जिआवामी रमनीति पर काम किया जा रहा है। एक ओर कई एनडीपीएस अभियान के तहत तस्करों की गिरफ्तारों कर संशोधन कुकें की जा रही है, तो दूसरी ओर देश में सरकारी और मानवा प्रात नशामुक्ति केंद्रों की संख्या बढ़ा कर 780 से अधिक की गई है, जिनके माध्यम से 8.20 लाख से अधिक लोगों को इलाज और पुर्वावल का लाभ मिल चुका है। अगर कड़े कानूनों और पुलिसिकारणों की अमली अंजाम सीमा है। वे केवल आगुर्ति को बालित कर सकते हैं। जब तक समाज के भीतर से नशेले पदार्थों की मांग समाप्त नहीं होगी, यह जग अशुभी रहेगी। हमें 'जेन नहीं, ललाब' और 'सहामृति, न कि शिश्किया' के सिद्धांत को अपनाना होगा। उलाखंड के बेहतरीन में एक गांव की महिलाओं ने जिस तरह मोचो बामा है, वह काबिजे-वारी है।

प्राथमिक तज पर ही स्कूलों और कॉलेजों में निर्माण जंच और पेसेतर कांशिलरों की नियुक्ति अतिव्यापी होगी। (लेक्चर, कला और रचनात्मक गतिविधियों को बढ़ावा देकर युवाओं की ऊर्जा को सकारात्मक दिशा देना आवश्यक है।) सबसे महत्वपूर्ण भूमिका परिवार की है। माता-पिता को अपने बच्चों के साथ भावनात्मक संवाद स्थापित करना होगा, ताकि बच्चे तनाव के क्षणों में मादक पदार्थ के बजाय परिवार का सहारा लें। सरकारी, नागरिक समाज, महिलाएं और परिवारों को एकजुट होकर 'नशे के विरुद्ध और शिश्की को हाँ' का नारा बुकंद करना होगा। एक नशामुक्त, स्वस्थ और मानसिक रूप से सुखद युवा पीढ़ी ही सभकत और आत्मनिर्भर भारत की वास्तविक नींव बन सकती है।

सिमटते सरोकार

श्याम यादव

माता-पिता जब बच्चे को बड़ा करते हैं, तो उनके सामने सबसे बड़ा सवाल यह नहीं होता कि अगर चलकर बच्चा उठने-लुगने क्या करेगा। उनकी चिंता यह होती है कि बच्चे को यह सब मिल जाए, जो वे उसे देना चाहते हैं। जो मुश्किलें उन्हें नहीं मिलीं, वे बच्चे को मिलान। जिस तरह पर उन्हें मुश्किलें आईं, बच्चे के लिए वह रास्ता खुला आसान हो। श्याम यादव इच्छा ने परिवारों की सोच भी बदली है। वे बच्चों के लिए परिवार के बाद अब एक-संतान परिवार की धारणा भी छोटी बहालवा क हिस्सा है। एक बच्चा हो, तो उसकी पढ़ाई-लिखाई पर अधिक खर्च किया जा सकता है, उसकी पढ़ाई और बच्चों को समझने के लिए अधिक समर्थन दिया जा सकता है और उसके बेहतर भविष्य की तैयारी भी बनी रहती है। एक बच्चे को अधिक असर देने की इच्छा आज बहुत-से माता-पिता के फैसलों में दिखाई देती है। इसमें कुछ अस्वाभाविकता भी नहीं है। अगर सवाल यह है कि परिवार छोटा होने के साथ क्या बच्चे का अपना संसार भी कुछ छोटा हो जाता है? एक समय पर मैं भाई-बहन होने और शिश्तेलरी की आवाजाही भी बनी रहती थी। दादा-दादी के पास बैंगना, चचा-चाची से झगड़ना, माता-मीलों में स्थिति गंभीर हो गई है। चालीस लाख से ज्यादा लोग बाढ़ से प्रभावित हुए हैं। बड़ी संख्या में लोग बेघर हो गए हैं। राहत शिविरों को अपनी सीमा है। गौरलव है कि हर साल नेपाल से आने वाली नदियां तबाही लेकर आती हैं। बावजूद इसके राज्य सरकार इन नदियों के पानी को प्रभावित और आना लोगों को राहत के लिए कोई ठोस तंत्र विकसित नहीं कर पाई है।

हर वर्ष बाढ़ रहत कार्यों पर निमित्तों के बजाय अगर सरकार बाढ़ निरोधन के उपायों पर ध्यान केंद्रित करती, तो इस समस्या को सुलझाने की दिशा में काफी आगे बढ़ा जा सकता था। नागरिकों की सुरक्षा के लिए बनाए गए नटबन्ध आज नाकाम साबित हो रहे हैं, तो इस समस्या की जड़ में जाने की जरूरत है। यह निराशाजनक ही है कि हर साल बाढ़ राहत के नाम पर रस्मों कवायद कर अमले वधे फिर बाढ़ की प्रतीक्षा की जाती है। एक बड़ी चुनौती है कि कि हिमालयी नदियां हर बार अपने साथ भारी मात्रा में गाद लेकर आती हैं, जो राज्य की नदियों में जमा होती जाती हैं। नतीजा यह कि उधरों हो रही नदियों का पानी रिहाशरी इलाकों को अपनी चपेट में ले लेता है। सुरासन का दाय्य करने वाली सरकार ने इस समस्या को गंभीरता से लिया होता, तो राज्य में जल अंधधुन की नई तस्वीर बन सकती थी। यह बेवजह नहीं है कि देश के अलग राज्यों की तुलना में बिहार को इस आपदा से सबसे अधिक नुकसान होता है। सही है कि बाढ़ को रोकना नहीं जा सकता, लेकिन सवाल पर योजनाओं को साकार कर जन-जीवन को व्यापक नुकसान से जबर बचाया जा सकता है।

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

दुनिया मेरे आगे

बच्चे को स्वातंत्र्य बानाना और उसे रिश्तों से मुक्त कर देना- डन दोनो में फंके हैं। उसे अखंड शिश्ता देना जितना जरूरी है, उतना ही यह सख्त देना भी जरूरी है कि जीवन में कुछ रिश्ते ऐसे होते हैं, जिन्हें सुधिया के हिस्सा से नहीं बिगाया जाता। वया परिवार छोटा होने के साथ हमारी दुनिया भी छोटी हो गई है?

कोई समस्या नहीं। सवाल यह इतना है कि क्या परिवार के छोटा होने के साथ हमारी दुनिया भी इतनी छोटी नहीं गई है कि उसमें माता-पिता के लिए जल निलजना मुश्किल पड़ने लगे?

हमारे अपने बच्चे को ज्यादा देर के लिए परिवार छोटा दिया। शाश्वत अब यह सोचने की बारी है कि हमने उसे दूसरों के लिए जग बाना निजना दिखाया। माता-पिता को अपने बच्चों से कोई प्रतिदान नहीं चाहिए। वे चाहते हैं कि बच्चा अपनी दुनिया बनाए, अगर बड़े और खुश रहे। बस इतना कि उस दुनिया में उनके लिए कोई काना ऐसा हो, जहां उस बच्चे पर भी उन्हें अपने होने का एकासा बन रहे। आखिर परिवार छोटा करना हमारी पसंद हो सकती है, लेकिन रिश्तों को छोटा करना हमारी मजबूरी नहीं होगी चाहिए।

मलबे में दबे सपने

दि

पैसे और रहने का खर्च उठाने हैं। उनकी आंखों में एक सपना होता है- बच्चा पढ़-लिख कर अपने पैरों पर खड़ा हो जाए। ऐसे में जब किसी हासरे की खबर पर पहुंचती है और पता चलता है कि उनका बच्चा अब नहीं रहा, तो उस परिवार का सपना जलता हो जाता है। सत्य निकेतन की इमारत गिरने की घटना ने इसी तरीके की सामने ला दिया है। कुछ सवाल हैं, जिनका जवाब मिलना चाहिए। क्या इमारत की स्थिति की समय-समय पर जांच की गई थी? मरम्मत कार्य बुक होने से पहले सुरक्षा संबंधी पहलुओं को देखा गया या नहीं? क्या बच्चा की संरचनात्मक मजबूती को लेकर परीक्षाएं की गईं थे? जांच के बाद भी 7 अरब सवालों का जवाब जांच के जरिए सामने आना चाहिए। अगर जांच में किसी तरह पर नियमों की अनदेखी या लापरवाही सामने आती है, तो जिम्मेदारी भी तब होगी चाहिए। हासरे के बाद जिम्मेदारी तब करना जरूरी है, लेकिन उससे भी ज्यादा जरूरी है कि ऐसी स्थिति दोहरा न बने।

जिम्मेदारी का सवाल

‘बु’ बच्चों की सुरा’ (संवादकर्ता, 9 सितंबर) पढ़ा। इसमें बुद्धायत्ता की उस धिड़बन को रेखांकित किया गया है, जिसमें जीवनपर परिवार के लिए समर्थन माता-पिता त्रुति बुद्धों में उपेक्षा और अस्वस्थ के शिकार हो जाते हैं। यह बहुरा ही निराशाजनक स्थिति है जो बच्चों की बुद्धों बच्चों को पात-पेदा कर बड़ा करते हैं। एक दिन वही बच्चे उन्नीस उपाय करने लगते हैं। सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि बुद्धों की समस्या को केवल परिवारिक ही नहीं, बल्कि

लालच का सिरा

‘त’ ब की जर्नल’ (संवादकर्ता, 8 सितंबर) पढ़ा। दिल्ली के सत्य निकेतन में पांच मिनटों के इलाक में उठने से वहां पीजी में रह रहे बेकसूर छात्रों की मौत दर्दनाक कहानी है। मित्रिक रूप से इसके लिए श्रावणिक तंत्र के साथ-साथ भवन के मालिक भी जिम्मेदार हैं जो बच्चों में बिना किसी का नतीजा है। इस मामले में सख्त कानूनी कार्रवाई को जानी चाहिए, ताकि बच्चे को ऐसी घटना दोहरा न हो।

संकट के बीच

ज नवरी 2026 में भारत को विश्व की अग्रस्थान मिली थी। अब भारत नई दिल्ली में विश्व का शिश्क समारोह 11 और 12 सितंबर को आयोजित करने जा रहा है। यह एक बड़ा आयोजन है। इस समारोह की बुरआत इस 1999 में हुई थी। बस से लेकर अब तक का इसे सबसे बड़ा शिश्क समारोह का रहा है। इस पर पूरी दुनिया की नजर रहेगी। इस समारोह से वैश्विक राजनीति में भारत फिर अपना प्रभाव ही नहीं छोड़ेंगा, बल्कि अपनी विदेश नीति की भी नया आयात प्रदान करेगा। निरसरेह यह बड़ी उपलब्धि होगी। यह समारोह इसलिए भी अहम माना जाता है, क्योंकि यह ऐसे समय में हो रहा है, जब दुनिया रूस और यूक्रेन के साथ-साथ अफिरका और ईरान युद्ध को भी देख रही है। यह संकट की घड़ी है और कई देश इस समय त्रस्त हैं।

- विजय किशोर तिवारी, नई दिल्ली



- श्रव्य सिंह, नई दिल्ली

- ओपी चौधरी, तलतम, मय

- वंद प्रकाश, गुलामा, हरियाणा

संपादकीय

ट्रम्प यांचे लाडके बहीण-भाऊ

भारताच्या अनेक राजकीय नेत्यांनी आपापल्या मिशा अभिमानाने पिळग्यात भरताच, ते हेड म्हणायची अर्थात, मिशा असतील तरी जगातील सर्वात शक्तिशाली लोकशाहीचे महाबली राष्ट्राध्यक्ष डोनाल्ड ट्रम्प आता चवक भारतीय राजकारणाच्या निवडणूक-शाळेत दाखल झाले आहेत. मतदारांना खुश करणारे, त्यांना आश्वासने देणारेच आणि गरज पडताने थेट रोख रक्कम देणारेच भारतीय राजकारणातील धडे त्यांनी एखाद्या हुशार विद्यार्थ्याच्या आत्मसात केले आहेत! आपण भारताला 'विश्वगुरू' बनविण्याचे स्वप्न पाहतो आहोत आणि ट्रम्प यांनी निदान विजयगुरूची बाबतीत तरी भारताकडून गुल्लक घेतलेला दिसतो. मतदारांना हे ना ते 'फोफट' देण्याची, निवडणुकीच्या तोंडावर त्यांच्या हातावर काही ना काही ठेवण्याची परंपरा लाभल्याच्या राजकारणातून सुरू झाली. हळूहळू तिने भारतातील जवळपास प्रत्येक राजाला आपल्या कंठेत घेतले आणि आता थेट अलटालिके पार करून ही कल्लूची थेट अमेरिकेत पोहोचली आहे. यंदाच्या नोव्हेंबरमध्ये अमेरिकन संसदेच्या निवडणुका होणार आहेत. राष्ट्राध्यक्षांच्या चार वर्षांच्या कार्यकाळाच्या मध्यावर होताना म्हणून त्यांना 'मध्यावधी काळा' म्हटले जाते. या निवडणुका राष्ट्राध्यक्षांच्या कामगिरीच्या मल्याच्या अस्तात. संसदेच्या दोन्ही सभागृहात बहुमत असेल, तर कारभार आपल्या मजीमामने चालविणे तुमनेच सोपे जाते. ४३५ सदस्यांच्या हाउस ऑफ रिप्रेझेंटेटिव्हमध्ये रिपब्लिकन पक्षाकडे सध्या २१८ जागा; म्हणजे अगदी काठावरचे का होईना, पण बहुमत आहे. शंभर सदस्यांच्या सिनेटमध्ये रिपब्लिकन पक्षाकडे ५३, तर डेमोक्रॅटिक पक्षाकडे ४७ जागा आहेत. अंकांपासून ट्रम्प उभार जाणतात. रिपब्लिकन पक्षाच्या काळात अजून कमी झाल्या, तरी त्यांना संसदेची अडथळांची शर्यत पार करावी लागेल. आणि नेमका कसोटीच्या वेळी ट्रम्प यांच्या लोकप्रियतेचा आलेख घसरत चालला आहे. ताज्या सर्वेक्षांमध्ये केवळ ३२ ते ३३ टक्के अमेरिकन नागरिक ट्रम्प यांच्या पाठीशी दिसतात. (तब्बल ६४ टक्के नागरिक त्यांच्याचारात आहेत. रिपब्लिकन पक्षाच्या मतदारांमधील ट्रम्प यांच्या पाठीशी ८२ टक्क्यांपर्यंत ७२ टक्क्यांपर्यंत घसरली आहे. हाउस ऑफ रिप्रेझेंटेटिव्हमध्ये रिपब्लिकन बहुमत धोक्यात असल्याचे संकेत आहे. सिनेटमध्येही लढत चुपशीची आहे. म्हणजेच मतदारांना आकर्षित करण्यासाठी ट्रम्प यांना काहीतरी मोठे करणे भाग आहे. भारतीय राजकारणाच्या पालावर पाऊल ठेवत त्यांनी हेच मतदारांच्या खिशाकडे मोर्चा चढवलेला दिसतो. इलास येथे झालेल्या रिपब्लिकन पक्षाच्या अधिवेशनात ट्रम्प म्हणाले, 'मध्यावधी निवडणुकांमध्ये रिपब्लिकन पक्षाने हाउस ऑफ रिप्रेझेंटेटिव्ह आणि सिनेट या दोन्ही सभागृहांवरही नियंत्रण कायम राखले, तर प्रत्येक प्रौढ अमेरिकन नागरिकाकडे पाच हजार डॉलरची रोख रक्कम दिली जाईल. ट्रम्प यांना या रोख रकमेने नाही गोंडस ठेवले आहे - 'ट्रम्प डिडिडेंड'. 'हा खास लाभार्थी ज्यांना मिळेल, त्यांच्यासाठी एक अटही आहे - हे पैसे अमेरिकेच्या हद्दीवर खर्च करायचे. म्हणजे मतदार खुश, पैसा देणारा राहणार, अर्थव्यवस्थेला बहर आणि निवडणुकीचे गणितीही नेमके अमेरिकेचे सुमारे २७ कोटी प्रौढ नागरिक आहेत. प्रत्येकाला पाच हजार डॉलर दिले, तर ट्रम्प डिडिडेंडसाठी तब्बल १२ ट्रिलियन डॉलरपेक्षा अधिक रक्कम लागेल. पळेई येते कुठून आणणार? आणि महत्त्वाचे म्हणजे, अमेरिकन राष्ट्राध्यक्षांना संसदेकडून मंत्री घेवल्याशिवाय अशी रोख रक्कम थेट वाटता येत नाही. त्यामुळे ही योजना प्रत्यक्षात आणणे ट्रम्प यांच्यासाठी तितकेच सोपे नाही. म्हणूनच खरा प्रश्न हा आहे, की मध्यावधी निवडणुकीत ट्रम्प यांच्या रिपब्लिकन पक्षाने संसदेतील बहुमत मिळवता तर काय होईल? या प्रश्नाचे उत्तर मिळवण्यासाठी थोडी वाट पाहवी लागेल. तोवरच अमेरिकेकडच्या डेमोक्रॅट्सनी आपले काम सुरू केले आहे. त्यांचे म्हणणे आहे, ही तर सरळ सरळ मतदारांची नेते विजय देण्याची वाट आहे. निवडणुकीत आपल्यालाच मत मिळावे यासाठी देऊ केलेली ही लाच आहे! काहीतरी ओळखीचे वाटते ते? आपल्याकडेही नेमकी हीच चर्चा पाहिली होती. फरक एवढाच की, तिथे पाच हजार डॉलर आहेत आणि इथे पाच-दहा हजार रुपये कदाचित म्हणूनच काही भारतीयांमध्ये ट्रम्प यांच्या योजनेला आता 'लाडला अमेरिकन योजना' आणि 'लाडला अडॅल्ट योजना' अशी नावे ठेवण्याला सुरुवात केली आहे. ट्रम्प यांनी भारतीय राजकारणातला हुकुमाचा पता पळवला आहे, त्या खेळाची थोडी किंमत त्यांनी चुकवली लागेलच की!

जगभर

फुलांची ओझी हा वहाकण्या लोकांचा उत्सव

कोलंबिया हा दक्षिण अमेरिकेला एक देश. इथल्या मेडेलिन नावाच्या शहरात दरवर्षी एक फ्लॉवर फेस्टिव्हल भरतो, फुलांचा उत्सव. त्याचला 'सिलेस्टोस परेड' अशीही म्हणतात. वेगवेगळ्या शोभिवंत कलाकॄतींच्या रूपात फुलं सजवून त्यांचं ओझी पाठीवर घेऊन इथले नागरिक या परेडमध्ये सहभागी होतात. १९व्या शतकात फुलांच्या सॅटा एलेन नावाच्या डोंगराळ भागात राहणारे शेवकरी आणि स्वाभिक लोक आजारी मुलं, हळू चवकी किंवा गर्भवती महिलांना कोलंबिया राष्ट्रात सुखरूप नेण्या-आणण्यासाठी लाकडी चौकटी वापरत असत. त्या चौकटींना 'सिलेटो' असे म्हणले जात असे. पुढे-पुढे इथले शेवकरी आणखी शेतातील फुलं या 'सिलेटो'वर बांधून ती विक्रीसाठी मेडेलिनच्या बाजारत आणू लागले. त्या लाकडी चौकटींची आणि त्यावर बांधून बाजारत विक्रीसाठी आणण्या जाणाऱ्या फुलांची आठवण म्हणून हा फ्लॉवर फेस्टिव्हल आणि

ही परेड आजही कोलंबियन लोकांसाठी महत्त्वाची आहे. आज पुढे वाहून नेण्याच्या या कामाचेच मेडेलिनला जगुक्त नकाशावर आपली ओळख मिळवून दिली आहे.

नृकलात्र मेडेलिन शहराजवळ हा फुलांचा उत्सव साजरा झाला. या उत्सवात वैविध्यपूर्ण म्हणजे तिथे राहणाऱ्या शेताच्यांच्या पिढ्या आजही या उत्सवात सहभागी होतात आणि आपल्या वाढविलेलींचा आठवण म्हणून फुलांची आकर्षक ओझी आनंदाने वाटवतात. चारपाय्या सिलेटोस परेडमध्ये २६ वर्षांची अस्ट्रीड लोरेन इवलादेव्झर रॉडिग्रे आणि तिची आई सहभागी होण्या होत्या. अस्ट्रीडच्या आजीने आपणवत ५० मिटरव्याकडे सहभाग घेतला आहे. तिची आई सई गेली १७ वर्षे या मित्रवतुकीत सहभागी आहेत. आता या दोन्ही पिढ्यांनी हा वारसा २६ वर्षांच्या उत्सवाकडे सोपवला आहे.

१९७७ मध्ये पहिल्यांदा हा फुलांचा उत्सव



मेडेलिनमध्ये आयोजित करण्यात आला. सॅटा एलेनमध्ये रहणारे शेवकरी आपल्या शेतातल्या फुलांनी सजवलेल्या सिलेटो पाठीवर घेऊन मित्रवतुकीत सहभागी झाले. ही मित्रवतुकी तेव्हा चांगल्याच लोकप्रिय झाली. त्यामुळे आजपर्यंत दरवर्षी हा उत्सव आणि मित्रवतुकी स्वागतिक आणि पर्यटकांचा आकर्षण बन आले.

आता काळाप्रमाणे ही मित्रवतुकी आणि त्याला पुष्पचराना अधिकाधिक भरवाडले होते चालत्या आहेत. काही मीटर व्यासाच्या चौकटीवर अनेक असेच प्रकारची फुलं सजवून लोक या मित्रवतुकीत

म्हणजे काय?

'कॉफी बॅजिंग' - सक्तीचे आहे म्हणून ऑफिसला यायचे इतकेच!

हायब्रीड कर्मचारी ठरल्या दिवशी ऑफिसला येतात, एकत्र कॉफी पितात, सहकाऱ्यांबरोबर वेळ घालवून काम करायला, मात्र पुन्हा घरीच जातात!

कोरोना काळात अनेक कंपन्यांचे कर्मचारी हे सक्तीने घरात बसून ऑफिसचे काम करू लागले. त्यामुळे जगभर कामाची पद्धत, हक्क कल्चरही बदलले. ऑफिसात जाऊन ठरावीक वेळेत काम करण्यापेक्षा घरातून, आपल्या कमांडर झोनमधून काम करणे हे अनेकांसाठी न्यू नॉर्म बनविले. या काळात झालेले अनेक बदल आजच्या अशी प्रचलित राहिले आहेत असले, तरी काही कंपन्यांनी आजही कर्मचाऱ्यांना त्यांच्या सोयीने काम करण्याची मुभा दिली आहे. काही कंपन्यांनी कर्मचाऱ्यांना ऑफिसला येण्याची सक्ती केली असली, तरी हळूहळू कंपन्यांनी हायब्रीड ही कामाची नवी पद्धत अंमलातली दिले.

हायब्रीड पद्धतीत कर्मचारी काही दिवस घरातून तर काही दिवस ऑफिसमधून काम करतात, मात्र, या व्यवस्थेकडे कामाच्या ठिकाणीपुढील आता एक न्यू नॉर्मल वर्तन दिसू लागले आहे. त्यालाच 'कॉफी



बॅजिंग' असे म्हणतात. नावावरून या वर्तनाचा संबंध कॉफीशी आहे, हे पुरेसे स्पष्ट होतेच. या कर्मचाऱ्यांना घरातून काम करणे आवश्यक पडले आहे ते ठराविक दिवशी ऑफिसला येणे सक्तीची आहे म्हणून येतात, कॉफी पितात, सहकाऱ्यांना भेटतात, त्यांच्याबरोबर वेळ घालवतात, पण काम करण्यासाठी मात्र ते पुन्हा आपल्या कमांडर झोनमध्ये, म्हणजे घरीच परततात. म्हणून या वर्तनाला 'कॉफी बॅजिंग' म्हटले जाते. म्हणजेच ऑफिसमध्ये येण्याचा मुख्य उद्देश हा तिथे येऊन काम करण्यापेक्षा येणे सक्तीचे असल्यामुळे आहेत होतो हे दाखवणे असा आहे.

हायब्रीड वर्तनाची पद्धत स्वीकारल्यानंतर काही कंपन्यांकडून कर्मचाऱ्यांना ठरावीक दिवशी ऑफिसमध्ये उपस्थित राहावे, अशी व्यवस्थापनाची अपेक्षा असते. कर्मचारी ती पूर्णही करतात. मात्र, त्यात

भाजपमध्ये निष्ठा प्रदर्शनाची पक्षांतर्गत स्पर्धा सुरू आहे. जुने म्हणतात, आम्ही आधी आलो. नवे म्हणतात, आम्ही आल्यावर सत्ता आली!

यदु जोशी
राजकीय संपादक,
लोकमत

भाजपच्या प्रदेश कार्यालयात पूर्वीसारखी वर्दळ सध्या दिसत नाही. एक सुस्ती आलेली दिसते. सत्तेची सूज बरेचदा अशी सुस्ती आणते. परवा एक पदाधिकारी भेटले, ते एक जुनी गोष्ट सांगत होते. उद्भव ठाकरे मुख्यमंत्री होते तेव्हा भाजपमध्ये असे ठरले की, सरकारविरुद्ध प्रवक्त्यांनी राज्यात राठी टिकचे काही मुद्दे उचलवणे. त्यानुसार रोज सकाळी त्यांना मुद्दे पुरवले जाऊ लागले. पश्चिम महाराष्ट्रातील एक राजकीय चारायातील नेतेझडीत प्रवक्ता होता. दोन दिवस गेले, आता दिवस गेले, पंधराव्या दिवसाला तरी ते काहीही बोललेना. त्यांना कार्यालयातून एकाने विचारले, 'अरे! तुम्ही काहीच का बोलत नाही?' ते नेते म्हणाले, 'अहो! सरकारकडे आम्हाला नेहमी काम पडते बघा! एकदम थेट त्रिशोवात बोलण्यात अवघण होते, मला प्लीज सांगू नका.' एकदमदायक म्हणजेच या नेत्याला काहीच महिन्यांनी राज्यभर पाहिले गेले.

बाहेरून आलेल्यांचे अधिक लाड होतात, असे पक्षातील जुने लोक अनेकदा बोलतात. भाजपमध्ये सध्या 'जुने विरुद्ध नवे' असे एक सूझम चित्र दिसते. नव्यांची अडचणही कमी नाही. पक्षात परत असे केल्यानंतर लगेच 'आम्ही तर जन्मजात निष्ठावंतच

होते!' असा आतिर्भाव आणता लागतो. पक्षाचा झेंडा हातात घेताच जणू बालपण्यासून तोच झेंडा ह्रदयात पोहोच, अशा धाट्यात निष्ठेच्या कथा त्यांच्या लावतात. पक्षा बदलला नाही, फक्त निष्ठेचा पता बदलला, असे म्हणण्याची वेळ येऊ नये इतक्या ही कला साधलेली असते. 'आमच्यावर भाजपचे संस्कार आहेत', असे युवा मोर्चाचे प्रदेशाध्यक्ष कृष्णराज मुद्गाडिक (मार खाल्त्याची कल्लू देणारे) म्हणले तेव्हा जरा हसूच आले. त्यांचे वडील मुन्ना मुद्गाडिक यांनी आपल्या याच मुलाचा उल्लेख 'महाराष्ट्र प्रदेश युवक काँग्रेसचा अध्यक्ष' असा केला. अशावेळी हातर काम आलेल्याबाबत जुन्यांनी नाराजी व्यक्त करू नये तसे काय करावे? असे पक्षाचे एक जुनेजाणते नेते परवा पत्रकारांशी गप्प मारताना म्हणत होते.

नव्या पक्षात सत्तेचे अनेक फायदे मिळाल्यानंतर तरी जुनी नाव तुटायला हरकत नसावी. काव्याचा झेंडा विसरणे आणि आजच्या झेंड्याशी जन्मजन्मांतच ते नसे सांगणे, ही राजकारणातील सर्वात वेगाने विकसित होणारी कला आहे हे वन कमी-कमी नमूद जाते. जुन्यांना मात्र या सगळ्याचे दुःख अधिक असते. घरासाठी आयुष्य घालवलेल्या माणसाला नव्याने आलेल्या पाहुण्याला घराची किती मिळालेली दिसली, की मनात खडबड होणार, पण इथेच एक तत्त्वज्ञानाचा प्रश्न उभा राहतो तो हा, की निष्ठा पक्षाशी असते की व्यक्तीशी? विचारांची असते की संतती? झेंड्याशी असे की झेंड्याच्या सार्वलीत मिळणाऱ्या संततीशी?



जुन्यांनीही एक गोष्ट लक्षात घ्यायला हवी. केवळ 'मी जुना आहे' म्हणून कायम पहिल्या रांगेत जागा मिळेल, असे कोणत्याही पक्षात नसते. राजकारणे हे संग्रहालय नाही. तिथे जुन्या वस्तूंना जणून ठेवण्यासाठी स्वतंत्र कपाटे नसतात. उचलण्यासाठी संतती, की कालचा शिलेदारही इतिहासाचा भाग होऊ शकतो. भाजपमध्ये आता निष्ठेचीही पक्षांतर्गत स्पर्धा सुरू आहे. जुने म्हणतात, आम्ही आधी आलो. नवे म्हणतात, आम्ही आल्यावर सत्ता आली!

नव्यांनीही एक गोष्ट समजून घ्यावी. पक्षात येणे सोपे असते, पक्षाचा इतिहास आपल्या अंगवार घेणे कठीण असते. निष्ठेचे प्रमाणपत्र स्वतःच घ्याऊन घेतल्याने ते खरे ठरत नाही. त्यासाठी कोणाची परीक्षा घ्यावी लागते. सत्ता जेव्हा नंतर कोणता उपा राहतो आणि सत्ता आल्यावर कोण पुढे सरसावतो, यातील फरकच खरी निष्ठा सांगतो. निष्ठा सांगायची लागत नाही, ती दिसते आणि जी वास्तव सांगायची लागते, तिच्यावर सर्वाधिक संशय घेतला जातो!

माल कामावलेल्यांच्या 'जुने निष्ठावंत' देखील कमी नाहीत बरा! मनोज जरांगे पाटील यांच्यावर टीका करताना राजकीय परिणाम भोगावे लागलीत, याची किंमत न करता मुख्यमंत्री पडणगीस यांच्यासाठी झाल

बनलेले बोटवार मोजण्याइतकेही नेते नाहीत. मोदी-फडणवीसंसह भाजप नेत्यांवर होणाऱ्या टीकेला सहोदर उत्तर देण्यात माजप कमी पडत आहे. सोशल मीडिया टीम नापास आहे.

फुलपाखराना प्रशिक्षण
भाजपमध्ये गेल्या दहा-पंधरा वर्षांमध्ये अनेक लोक आले, त्यांना वापनेची-अडचणी फक्त ऐकून माहिती आहेत. दीनदयाल उपाध्याय, श्यामाकासद मुखर्जीचे दिवाच त्यांना मुळीच ठाऊक नाहीत. संतेच्या गाडीत बसायला मिळते म्हणूनही अनेकजण आले. नारायणिका-मुगापालिकांमधील ६० ते ७० टक्के नगरसेवक ही कधी ना कधी बाहेरून आलेली फुलपाखरे आहेत. ते आणि जुने अशा सगळ्यांना जणून ठेवण्यासाठी स्वतंत्र कपाटे नसतात. उचलण्यासाठी संतती, की कालचा शिलेदारही इतिहासाचा भाग होऊ शकतो. भाजपमध्ये आता निष्ठेचीही पक्षांतर्गत स्पर्धा सुरू आहे. जुने म्हणतात, आम्ही आधी आलो. नवे म्हणतात, आम्ही आल्यावर सत्ता आली!

नव्यांनीही एक गोष्ट समजून घ्यावी. पक्षात येणे सोपे असते, पक्षाचा इतिहास आपल्या अंगवार घेणे कठीण असते. निष्ठेचे प्रमाणपत्र स्वतःच घ्याऊन घेतल्याने ते खरे ठरत नाही. त्यासाठी कोणाची परीक्षा घ्यावी लागते. सत्ता जेव्हा नंतर कोणता उपा राहतो आणि सत्ता आल्यावर कोण पुढे सरसावतो, यातील फरकच खरी निष्ठा सांगतो. निष्ठा सांगायची लागत नाही, ती दिसते आणि जी वास्तव सांगायची लागते, तिच्यावर सर्वाधिक संशय घेतला जातो!

माल कामावलेल्यांच्या 'जुने निष्ठावंत' देखील कमी नाहीत बरा! मनोज जरांगे पाटील यांच्यावर टीका करताना राजकीय परिणाम भोगावे लागलीत, याची किंमत न करता मुख्यमंत्री पडणगीस यांच्यासाठी झाल

yadujoshi@lokmat.com

अन्वचार्य

नको देवराय, अंत आता पाहू; पाण हा सर्वथा जाऊ पाहे!

रस्त्यावर मध्यरात्री गोंगाट करणाऱ्या हाटकेले म्हणून मणिपूरच्या संगीतकाराचा खून होतो, पुण्यात वापटांना मारहाण होते, हे काय चालले आहे?

संजय नहार
इंडियन, सरदर

६ सप्टेंबर २०२६ची रात्र दक्षिण दिल्लीतील किलकरी भागात राहणाऱ्या आणि मूळच्या मणिपूरच्या असणाऱ्या संगीतकार चोथम विक्रम सिंग यांच्या कुटुंबीयांसाठी काळरात्र ठरली. 'फिनिकस' नावाने त्यापुढे मणिपूरमध्ये प्रसिद्ध रॉक बँडचे लीड गिटारवादक आणि संगीत शिक्षक असलेले विक्रम सिंग यांची दिल्लीत झुडोईने हत्या झाली. हत्येचे कारण दुरुकणी अगदी किरकोळ होते. चोथम विक्रम सिंग यांना आपल्या कुटुंबीयांना शांतता होई होती, आणि घराबाह्यी गोंगाट सुरू होता. शेविल दाब्यावर काही तरुण दारू घेऊन घुसून गेले. गोंगाट चालू होता. नका, असे सांगण्यासाठी ५४ वर्षीय चोथम विक्रम सिंग खाली आले, त्यांची तरुणशी बाचाबाची झाली आणि त्यांना जमाजकूनून बेदम मारहाण करण्यात



आली. ही मारहाण सुरू असतानाच त्यांचा मुलगा यादवाबा आणि त्यांची पत्नी जोशना चोथम यांनी पोलिसांकडे तक्रार केली. सिंग यांना रुग्णालयात दाखल करण्यात आले पण उपचारादरम्यान त्यांचा मृत्यू झाला. यापुढीही त्यांना दमदाटी करण्यात आल्याचे वृत्त आहे.

काही वर्षांपूर्वी याच बँडच्या काही सदस्यांनी माझी भेट झाली होती. मणिपूरमध्ये संगीत, नाटक, कला यांचे मोठे आकर्षण आहे. गेल्या काही महिन्यांत मेतेची विरुद्ध कुकी आणि कुकी विरुद्ध नगा अशा संघर्षांमध्ये मणिपूर अडल असताना अशा प्रकारचे कार्यक्रम जवळपास बंदच झाले आहेत. रान किंवा मणिपूरच्या उत्पत्तीसह नाटकावर तसेच रंगमंचावर अशा भूमिने दिला, त्या भूमिपूत दिल्लीत आलेल्या विक्रम सिंग यांच्या हत्येचे केवळ इतक्या भारतातच नाही तर देशातील संगीतप्रेमी आणि सृजना नागरिकांमध्ये दाबवत बसत.

आज महाराष्ट्रात डीजे हवा की नको, तो आपल्या धर्माचा एक भाग आहे का आणि तो ठरवता येणार नाही का? - यावर साधक-साधक चर्चा सुरू आहे.

मित्र मंडळ तसेच हिंदूमाता तरुण मंडळ या सार्वजनिक गणेशोत्सव मंडळाच्या माध्यमातून पुण्यातील नाना पेठेत कार्यकर्त्यां ते पदाधिकारी अशा सर्व भूमिकांमध्ये काम केले आहे. त्यामुळे मला दोन्ही बाजूंच्या भावना समजतात.

माझ्या घराबाहेर गणेशोत्सवाचा मांडव असे व रात्रभर गाणी लावली जात. त्यावेळी या आवाजाची इतकी सवय झाली होती की, त्याचा त्रास वाटत नसे. नंतर कालाकूप ही वेळ रात्री बारापर्यंत आली. त्यानंतर प्रचंड ध्वनिमुद्रण करणारे डीजे आले. त्याचा आवाज घायाली लहान मुले, दयस्वरूप नासले आणि रुग्णांसाठी जीवघाताच असतो. पुण्याच्या सदाशिव पेठेत राहणाऱ्या एक आजी शय्या आजारी असतात. त्यांनी मला संत कवित्वी काण्हाजी नांना पेशवराया शाकतात लिहिलेल्या अभंग्याचा देन ओळी पाठवली.

'नका देवराय, अंत आता पाहू!'
दिल्ली हा सध्या, जाऊ पाहू!'
प्रसिद्धीच्या ज्ञांच्या मुलाची झुंडीकून हत्या झाली, त्यांची ओळख 'मणिपूरच्या लता मेशकर' अशी आहे. त्या ८५ वर्षांचा आहेत.

इम्फळमध्ये राहणाऱ्या या वयोवृद्ध चोथम कमला या आईची म्हणजेच मणिपूरच्या प्रसिद्ध शास्त्रीय गायिकेची भावना यापेक्षा वेगळी नसते.

जगभर

...ही तर भारताचीच नाचकळी!

पेरिसमधील आयफेल टॉवर संदर्भितले वृत्त वाचले. एक हिंदू धार्मिक संघटनेच्या (बाप) प्रतिनिधी आलेले आयफेल टॉवरला भेट दिली असता, तिथे कार्यरत असलेल्या महिला कर्मचाऱ्यांना त्यांच्या कार्यवृत्त्यासून दूर ठेवण्याची किंवा तिथून हटवण्याची मागणी केली. परदेशी भूमिवर जाऊन तिथल्या महिला कर्मचाऱ्यांशी असा भेदभावता एकरा अर्थात निषाध आहे. या घटनेकडे पाहतांना आपल्या देशाचा प्रतिहार कविरा आणि सामाजिक संघर्ष कलौत्यारमो येतो. माझ्या जोतिराहसिक व क्रांतिज्योती सावित्रीबाई फुले या दाम्पत्याने संघर्ष करत शिल्पकारांची आणि क्रांतीची ज्योती पेटवली. पुढे भारतीयां राज्यघटनेत तिथल्या भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी संविधानाच्या माध्यमातून भारतीय स्त्रीला फुलांच्या बरोबरीने हक्क, अधिकार आणि समानाने जगण्याची ताकद मिळवून दिली. त्याच देशातील काही मंडळी परदेशात जाऊन महिलांसोबत दुजामान करतात, हे आपल्या वैचारिक मंडळीचे सक्षम आज.



या प्रकामाकडे फ्रान्समध्येही तीव्र राजकीय प्रतिक्रिया उमटल्या. फ्रान्समधील काँग्रेस संघटनेची याविषयक थेट काम बंद आदेश पुरावले, तर वाढत्या टीकेकडे अखेर पेरिसमधील संबोधित महिलांना वाढलेल दिलगिरी व्यक्त करून माफी मागवी लागली. स्वतःच्या देशात पिछाड्यांच्या स्थितीवर होणाऱ्या अन्यायाची मलमलू करणारेले, असा हाच मानसिकता परदेशात होणाऱ्या भारतीया आंतरराष्ट्रीय पातळीवर नाचकळी करणे जवळी दुर्दैवी आहे.

- आशिष चवधरण, यवतमाळ

समकालीन महत्त्वाचे मुद्दे मांडणारी, नवी चर्चा सुरू करणारी वाचक-पत्रे या संभाषणे प्रसिद्ध केली जातील. आपली पत्रे येथे पाठवा : janman@lokmat.com

तिकस आणि चौकस

गजानन घोडगे

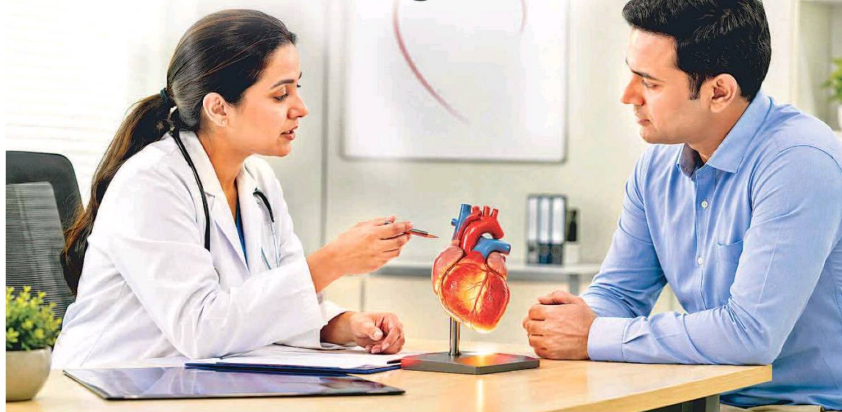


हृदय रोग होने पर कैसे चुनें इलाज

एजियोग्राफी में ब्लॉकेज दिखने के बाद सही इलाज क्या होगा, इसका हमेशा एक सीधा जवाब नहीं होता। खासकर, जब दो डॉक्टरों की राय अलग-अलग हो, तो फैसला करना कठिन हो जाता है। केवल ब्लॉकेज का प्रतिशत देखकर घबराए नहीं। दवा, स्टेंट या बाईपास सर्जरी में से किस चुनना बेहतर होगा, इस पर विशेषज्ञों की राय बता रही है **तृपति मिश्रा**

डॉक्टर ने 58 साल के राजेंद्र को एजियोग्राफी की सलाह दी। पिछले कुछ दिनों से वह थोड़ा सा भी चलने पर थक जाते थे। सोने में भारीपन के साथ कंधे और पीठ में भी लगातार हल्के दर्द की शिकायत थी। एजियोग्राफी में जब दिल की नसों में ब्लॉकेज का पता चला, तो घबराहट के साथ उलझन भी बढ़ गई। राजेंद्र को डायबिटीज पहले ही थी और जांच में दो नसों में 85% के करीब ब्लॉकेज आई थी। एक डॉक्टर स्टेंट की सलाह दे रहे थे, वहीं दूसरे डॉक्टर तुरंत बाईपास सर्जरी पर जोर दे रहे थे। ऐसे कई मरीजों को वह रास्ते भी दिखते हैं। ये कि स्टेंट लगवाना जाए या बाईपास सर्जरी कराई जाए

इलाज के फर्क को समझिए
 ■ **एजियोग्राफी:** जब कोरोनरी नसों में गंभीर बीमारी का संदेह हो या इलाज तब करने के लिए नसों की स्थिति देखना जरूरी हो, तब एजियोग्राफी की जाती है। यह बीमारी देखने की जांच है, इलाज नहीं। हाथ या जांच की रक्त वाहिका से कैथेटर डालकर, स्टेंट और एक्स-रे की मदद से ब्लॉकेज की जगह, गंभीरता और प्रभावित नसों की संख्या देखी जाती है।
 ■ **एजियोप्लास्टी:** संकीर्ण नस को बैलून से खोलने की प्रक्रिया। जल्दतः पड़ने पर नस को खुला रखने के लिए स्टेंट लगाया जाता है।
 ■ **बाईपास:** ब्लॉकेज वाले क्षेत्र के बजाय स्वस्थ रक्त वाहिका की मदद से ओरर रक्त पहुंचाने का नया रास्ता बनाया जाता है।
 ■ **ओपन हार्ट बाईपास:** छाती खोलकर की जाने वाली पारंपरिक बाईपास सर्जरी।
 ■ **रोबोटिक बाईपास:** इन्होंने छोटे चीरे की मदद से सर्जरी करते हैं। रोबोट की सहायता ही नियंत्रित करते हैं। रिकवरी कुछ मामलों में जल्दी हो सकती है, लेकिन यह हर मरीज के लिए उपयुक्त नहीं है।
 ■ **रक्तमय स्थिति:** स्थिति अस्पष्टता के हार्ट टैप के पूर्व विचार मनुष्य और काइडियोलॉजिस्ट डॉ. संपन्न चुप के अनुसार, 'स्टेंट या बाईपास का फैसला केवल मरीज को उस या ब्लॉकेज का प्रतिशत देखकर नहीं किया जाता। ब्लॉकेज किस नस में है, नस कितनी पतली है, मरीज के किण्वन कैसे हैं, किडनी या डायलिसिस की समस्या या दिल की पंपिंग कैसे है, इन सबके आधार पर फैसला किया जाता है। कुछ मरीजों



जरूरी स्टेंट और उनकी भूमिका

- **ईसीबी:** दिल की धड़कन या हार्ट अटैक/इस्कीमिया के कुछ संकेतों के लिए।
- **ईसीबी:** दिल की पंपिंग क्षमता, पल्प और

संरचना देखने के लिए।

- **डबल टैरेट:** शुगर, कोलेस्ट्रॉल, किडनी की कार्यक्षमता व अन्य जोखिमों के आकलन के लिए।
- **कोरोनरी सीटी एजियोग्राफी (सीसीटी):** कोरोनरी धमनियों में लाक और ब्लॉकेज की

स्थिति देखने के लिए। कई मरीजों में यह बिना कैथेटर वाली जांच का विकल्प है।

- **स्टेंट टैरेट/इम्प्लांट:** धमनियों के दौरान हृदय तक रक्त की आपूर्ति प्रभावित हो या नहीं, यह देखने के लिए। इसमें स्टेंट ईंको या न्युक्लियर इम्प्लांट

शामिल हो सकती है।

- **कोरोनरी एजियोग्राफी:** कैथेटर से ब्लॉकेज की जगह व गंभीरता देखने के लिए। जरूरत होने पर इसी दौरान एजियोप्लास्टी की जा सकती है।

में दवाओं और जीवनशैली में बदलाव से ही आराम आ जाता है। नोएडा के हेरिटेज हॉस्पिटल के इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजिस्ट के एचओडी डॉ. चोपड़ा सतीश के अनुसार, 'उपचार या कमजोर मरीज में अगर ब्लॉकेज को स्टेंट से सुधरित तरीके से खोला जा सकता है, तो बाईपास के बजाय स्टेंट का चुनाव किया जाता है। ऑपन फैसला ब्लॉकेज की पूरी बनावट, सिस्टम स्कोर व मरीज की स्थिति देखकर किया जाता है। किसी दूसरे मरीज को कितने स्टेंट लगे या उसका बाईपास हुआ, इसे अपने इलाज का आधार न बनाएं। यह भी ध्यान रखें, स्टेंट या बाईपास के बाद भी पूरी देखभाल व पररेज की जरूरत पड़ती है।'

दूसरे डॉक्टर से राय जरूरी

अगर लक्षण स्थिर हैं, इलाज के लिए कुछ समय रुका जा सकता है, तो दूसरे विशेषज्ञ से जरूर सलाह लें। एजियोग्राफी की सीटी/टैरेट, ईसीबी, ईंको, ब्लैक टैरेट, पुरानी रिपोर्ट और चल रही दवाओं की सूची साथ रखें। जरूरत हो, तो काइडियोलॉजिस्ट और बाईपास सर्जन, दोनों की राय एक साथ लें। एक टीम के तौर पर राय करने से बेहतर फैसला कर सकेंगे। हार्ट अटैक, बहुत से रक्त के दर्द या सांस की गंभीर तकलीफ जैसी आपातस्थिति में दूसरी राय के लिए इलाज इलाज खतरनाक हो सकता है।

दवा, स्टेंट या बाईपास-कब क्या जरूरी?

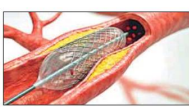
स्थिति ब्लॉकेज है, पर लक्षण नियंत्रित हैं और तकाल इंटरवेंशन की जरूरत नहीं

ब्लॉकेज की जगह और संख्या पीसीआई की लिए उपयुक्त है।

कई नसों में जटिल ब्लॉकेज बायीं और की मुख्य नस में गंभीर ब्लॉकेज

डायबिटीज के साथ कई नसों में ब्लॉकेज, खासकर एलडीयानी मुख्य नस का प्रभावित होना

नोट: यह सामान्य जानकारी है। मरीज की समग्र स्थिति के अनुसार काइडियोलॉजिस्ट और सर्जन की टीम विचार करती है।



विकल्प दवा, जीवनशैली व खान-पान में बदलाव और नियंत्रित जांच

जल्दतः के अनुसार स्टेंट

बाईपास (सीबीपी) पर विचार

आमतौर पर बाईपास (कुछ मरीजों में एजियोप्लास्टी का चुनाव भी किया जा सकता है।

जल्दतः के अनुसार स्टेंट

नोट: यह सामान्य जानकारी है। मरीज की समग्र स्थिति के अनुसार काइडियोलॉजिस्ट और सर्जन की टीम विचार करती है।

क्या कहते हैं एक्सपर्ट

ब्लॉकेज सुनते ही घबराएं नहीं

एजियोग्राफी में ब्लॉकेज दिखने का मतलब यह नहीं कि मरीज को तुरंत बाईपास सर्जरी करनी होगी। अगर मरीज सामान्य रूप से चल रहा है, लक्षण दवाओं से नियंत्रित हैं और स्थिति स्थिर है, तो केवल 80-85 प्रतिशत ब्लॉकेज देखकर घबराएं नहीं। कई स्थितियों में दवाएं, स्टेंट, कोलेस्ट्रॉल व ब्लड प्रेशर को नियंत्रित रखने से आराम आ जाता है। 'स्टेंट लगाना या खाना है' और 'स्टेंट लगाना जरूरी है', दोनों अलग बातें हैं। दवाओं के बावजूद लक्षण बने रहने पर एजियोप्लास्टी या बाईपास को चुन जाते हैं। हार्ट अटैक या इमरजेंसी में एजियोप्लास्टी के समग्र ही एजियोप्लास्टी जरूरी हो सकती है। अगर पहले की तुलना में बहुत कम चलने पर सीने में दर्द होने लगे, सांस फूलने लगे या दर्द बढ़ता जाए तो इसे रद्द करने में सावधान।

डॉ. राकेश यादव, पोस्टग्रेजुएट ऑफ काइडियोलॉजी व विभाग प्रमुख इमरजेंसी मेडिसिन, एम्स, दिल्ली

डॉक्टर से ये सवाल जरूर पूछें

- ब्लॉकेज कहाँ है और स्थिति कितनी जटिल है?
- ब्लॉकेज की रणनीति? क्या स्टेंट से काम चल सकता है?
- क्या तुरंत उपचार करने की जरूरत है?
- क्या दवाओं से नियंत्रित हो सकती है?
- प्रक्रिया के फायदे, जोखिम और रिकवरी में कितना समय लगेगा?

चश्मा बनवाने समय केवल फ्रेम की सुंदरता न देखें

नया चश्मा बनवाने समय केवल यह देखना पर्याप्त नहीं कि चश्मा चेहरे पर कैसा लग रहा है? आंखों का सही नेबर, लेंस और उस पर की जाने वाली कोटिंग की भी अहम भूमिका होती है, समझें वरिष्ठ नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. राजीव जैन से



सबसे महंगा फ्रेम या लेंस ही अच्छे चश्मे की गारंटी नहीं है। सही चश्मा बनाने है, जो आपकी जरूरत के मुताबिक हो। सबसे पहले, आंखों की पूरी जांच करवाएं के बाद ही नया चश्मा बनवाना चाहिए। खासकर, अगर अचानक दुर्घटना हो जाए, आंख में दर्द हो, चमक, नए फ्लेयर्स या वस्तुएँ धुँधिल दिखाने दें, तो आंखों की जांच जरूरी है।

फ्रेम का चुनाव कैसे करें

- फ्रेम चेहरे पर आराम से व स्थिर रहना चाहिए। फ्रेम बहुत चौका या टाइट न हो, इससे नक और कान पर दबाव पड़ता है।
- आंखों फ्रेम के भीतर सही स्थिति में होंगे चाहिए। चेहरे और लेंस के नंबर के अनुसार फ्रेम का आकार चुनें। इससे लेंस को मोटाई और देखने की गुणवत्ता पर असर पड़ सकता है।
- अधिक नंबर वाले पर बहुत बड़े फ्रेम से चर्चे। इससे लेंस मोटे और भारी हो सकते हैं। प्रोफेशनल लेंस के लिए फ्रेम की कच्चाई पर ध्यान दें।

सबको हर तरह की कोटिंग की जरूरत नहीं है। यही फिनिशिंग कोटिंग: यह लेंस की सतह से होने वाले प्रकाश के परावर्तन और वजन को कम करती है। तब से हेडलाइट से होने वाली परेशानी में यह मदद। अधिक खीन टाइम व मिनिमल चर्मा फलने वाली के लिए उपयोगी। लेंस राफ़र रखना आसान।

अपने लेंस को भी जानें

- **लेंस-रिफ्रेक्ट कोटिंग:** खरोब पड़ने की आशंका कम। लेंस माइक्रोफ़ैब्रिक कपड़े से ही सही करे। चश्मा रखते हुए लेंस जमीन या किसी सतह से न लगे।
- **यूवी प्रोटेक्शन:** सूर्य की परावर्तनी किरणों से बचाव में मदद। बाहर अधिक समय बिचने वाली के लिए उपयोगी।
- **ब्लू-लाइट:** हर ब्लॉकेज के लिए जरूरी नहीं। स्क्रीन से निकलने वाली नीली रोशनी को कम करती है, पर हर समस्या का हल नहीं है। कंजुडर पर काम करते समय सही दूरी, उचित रोशनी, नियमित ब्रेक और पलक झपकाते रहना जरूरी है।
- **फोटोक्रोमिक व पोलारिज्ड लेंस**
फोटोक्रोमिक लेंस धूप में अपने आभूषण गहरे रंग के हो जाते हैं। बेसिक फोटोक्रोमिक लेंस की बजाय धूप में ड्राइविंग के लिए फिटकराम मिलाने उपयोगी होते हैं। हालांकि, ड्राइविंग के लिए विशेष फोटोक्रोमिक लेंस हैं। पोलारिज्ड लेंस, सड़क, पानी व चमकदार सतहों से आने वाली चमकीली कम करती है। ड्राइविंग और यात्रा में बेहतर रहते हैं।
- **यॉर्बोविकनोटेड:** हल्के लोते हैं। हल्का लोते पर स्टूट का खतरा कम होता है। बच्चे, खिलाड़ियों और सर्फिंग लोगों के लिए उपयोगी रहते हैं।
- **कांच:** खरोब की आशंका कम, पर चमक में भारी और आसानी से टूट सकते हैं। सामान्य उपयोग में प्लास्टिक लेंस कठिन (उत्तर आगले अंक में)।

रोजाना मचा

वर्गपहेली: 8448



बाएँ से दाएँ

1. टट की खां कराले वाला (5)
2. टटन कराले, चला कराले (5)
3. टटन, निराला (2,3)
4. चिंता बलाना, ध्यान रखना, धार में छोड़ना; बहाना (4,3)
5. कृष्ण; प्यास; शूंदर; मन को मोहने वाला (5)
6. खिदमतगार; तीमारदार; परिचर्या करने वाला; अन्तर; सेवक; सेवक (5)
7. रचना में सहायक; निर्माण करने वाला (5)

ऊपर से नीचे

1. चमक; आवेग; आनंद; क्रोध होना; गुस्से से चेहरा लाल होना; रुधिर होना (5)
2. चोने वाला; चोरी (3)

सबको हर तरह की कोटिंग की जरूरत नहीं है

यही फिनिशिंग कोटिंग: यह लेंस की सतह से होने वाले प्रकाश के परावर्तन और वजन को कम करती है। तब से हेडलाइट से होने वाली परेशानी में यह मदद। अधिक खीन टाइम व मिनिमल चर्मा फलने वाली के लिए उपयोगी। लेंस राफ़र रखना आसान।

अपने लेंस को भी जानें

- **लेंस-रिफ्रेक्ट कोटिंग:** खरोब पड़ने की आशंका कम। लेंस माइक्रोफ़ैब्रिक कपड़े से ही सही करे। चश्मा रखते हुए लेंस जमीन या किसी सतह से न लगे।
- **यूवी प्रोटेक्शन:** सूर्य की परावर्तनी किरणों से बचाव में मदद। बाहर अधिक समय बिचने वाली के लिए उपयोगी।
- **ब्लू-लाइट:** हर ब्लॉकेज के लिए जरूरी नहीं। स्क्रीन से निकलने वाली नीली रोशनी को कम करती है, पर हर समस्या का हल नहीं है। कंजुडर पर काम करते समय सही दूरी, उचित रोशनी, नियमित ब्रेक और पलक झपकाते रहना जरूरी है।
- **फोटोक्रोमिक व पोलारिज्ड लेंस**
फोटोक्रोमिक लेंस धूप में अपने आभूषण गहरे रंग के हो जाते हैं। बेसिक फोटोक्रोमिक लेंस की बजाय धूप में ड्राइविंग के लिए फिटकराम मिलाने उपयोगी होते हैं। हालांकि, ड्राइविंग के लिए विशेष फोटोक्रोमिक लेंस हैं। पोलारिज्ड लेंस, सड़क, पानी व चमकदार सतहों से आने वाली चमकीली कम करती है। ड्राइविंग और यात्रा में बेहतर रहते हैं।
- **यॉर्बोविकनोटेड:** हल्के लोते हैं। हल्का लोते पर स्टूट का खतरा कम होता है। बच्चे, खिलाड़ियों और सर्फिंग लोगों के लिए उपयोगी रहते हैं।
- **कांच:** खरोब की आशंका कम, पर चमक में भारी और आसानी से टूट सकते हैं। सामान्य उपयोग में प्लास्टिक लेंस कठिन (उत्तर आगले अंक में)।

वर्गपहेली: 8447



सुडोकू: 8402



खेलों का तरीका

खेलों का तरीका: दिमाग खेल और नवंबर की फेली है। वक। अगर नी-नी खानों के नी खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खानों और पंक्तियों में हर एक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएँ। साथ ही 3x3 के हरे बॉक्स में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। फंक्शन का हल हम कर देंगे।

सुडोकू: 8401



पं. राखेन्द्र शर्मा

ज्योतिषाचार्य

पं. राखेन्द्र शर्मा ज्योतिषाचार्य

पं. राखेन्द्र शर्मा ज्योतिषाचार्य

पं. राखेन्द्र शर्मा ज्योतिषाचार्य

पं. राखेन्द्र शर्मा ज्योतिषाचार्य

पं. राखेन्द्र शर्मा ज्योतिषाचार्य

पं. राखेन्द्र शर्मा ज्योतिषाचार्य

पं. राखेन्द्र शर्मा ज्योतिषाचार्य

पं. राखेन्द्र शर्मा ज्योतिषाचार्य

पं. राखेन्द्र शर्मा ज्योतिषाचार्य

पं. राखेन्द्र शर्मा ज्योतिषाचार्य

पं. राखेन्द्र शर्मा ज्योतिषाचार्य

पं. राखेन्द्र शर्मा ज्योतिषाचार्य

पं. राखेन्द्र शर्मा ज्योतिषाचार्य

पं. राखेन्द्र शर्मा ज्योतिषाचार्य

पं. राखेन्द्र शर्मा ज्योतिषाचार्य

पं. राखेन्द्र शर्मा ज्योतिषाचार्य

पं. राखेन्द्र शर्मा ज्योतिषाचार्य

पं. राखेन्द्र शर्मा ज्योतिषाचार्य

पं. राखेन्द्र शर्मा ज्योतिषाचार्य

पं. राखेन्द्र शर्मा ज्योतिषाचार्य

पं. राखेन्द्र शर्मा ज्योतिषाचार्य

अपने विचार
हरिभूमि कार्यालय
टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स :
0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से
hbcgpati@gmail.com पर भेज सकते हैं।

- सोशल मीडिया पर रेप का वीडियो पोस्ट कर विवादों में फंस चुकी हैं। घटना यूक्रेनी महिला के साथ हुई थी, जिसे बाद में डिलीट कर दिया था।
- प्रवासियों की नावों को इटली में प्रवेश से रोकने के लिए नौसैनिक नाकाबंदी वाले बल को मंजुरी दी है। लोग इस कदम को दमनकारी बता रहे हैं।

